e-Magazine

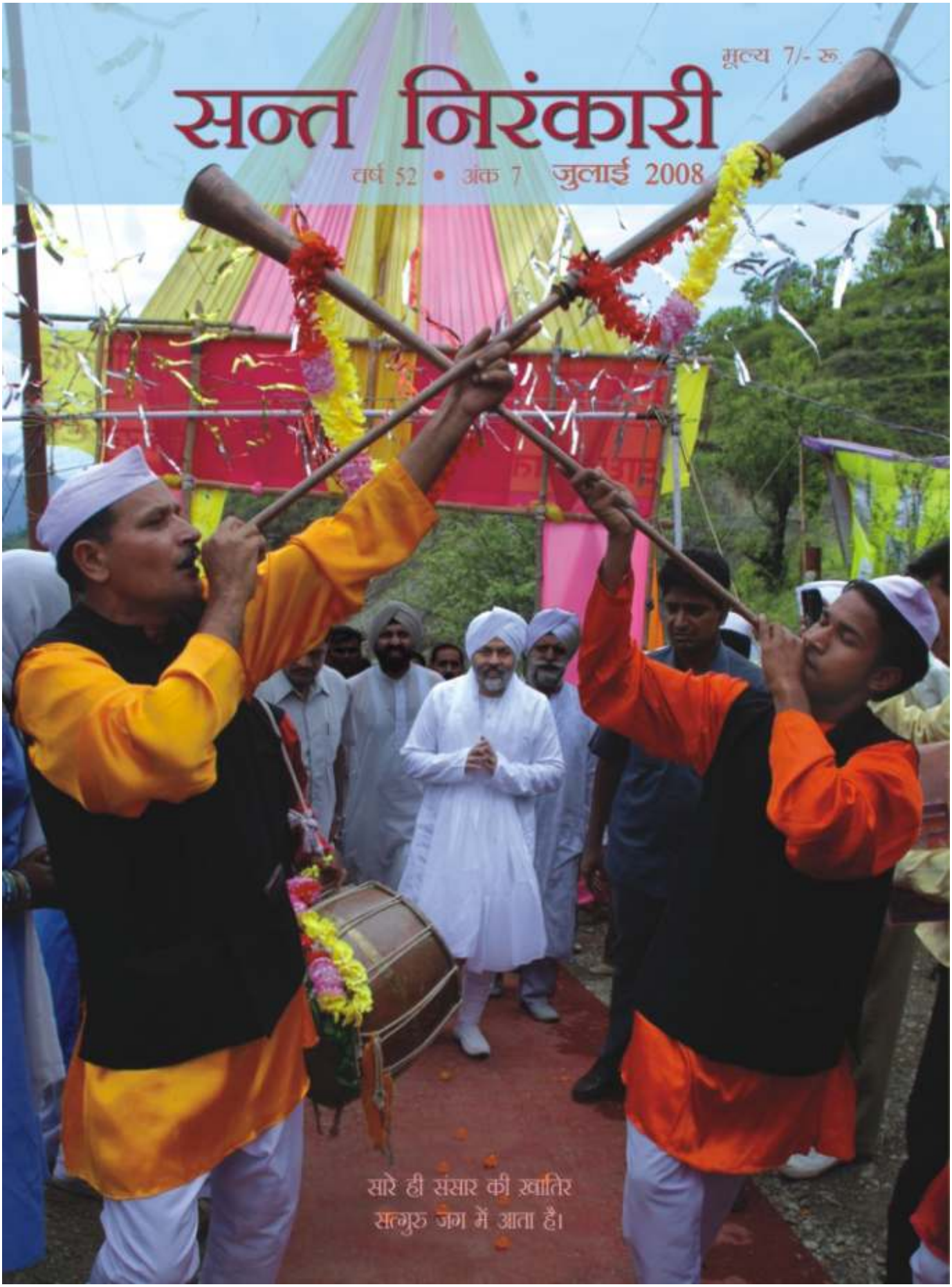

पालमपुर में आयोजित पर्यावरण कन्वेंशन में गुरुदेव हरदेव जी का स्वागत करते हुए स्वीडन के पूर्व प्रधानमंत्री श्री ओला उल्स्टेन तथा कन्वेंशन के अध्यक्ष डॉ. माधव मेहरा

प्रदूषणरहित, बैटरीचालित कार 'रेवा' का शुभारम्भ करते हुए सदगुरु बाबा जी

कंसुआ खुर्द (पंजाब) में ब्रह्मलीन कवि दरबारा सिंह जी के परिवार को सांत्वना देते हुए गुरुदेव हरदेव जी

सन्त निरंकारी

(प्रार्थना विशेषांक)

वर्ष 52 | जुलाई 2008 | अंक 7

स्थायी

सम्पादकीय	राम कुमार 'सेवक'	2
श्री गुरुवचनामृत	सद्गुरु बाबा जी	17

लेख

मानव पर्यावरण	दमनेश कुमार	3
कर्म व चमत्कार	गोपी चन्द डोगरा	6
प्रार्थना – एक यथार्थ	आर.के.'प्रिय'	9
कुछ प्रार्थनाएं	संकलन	11
प्रार्थना	डॉ. दर्शन सिंह	13

रिपोर्ताज / विशेष

साक्षात्कार – माता कान्ता जी	हरजीत निषाद	14
आवश्यक सूचनाएं	सी.एल.गुलाटी	27
10वें पर्यावरण कन्वेंशन की रिपोर्ट	हरजीत निषाद व विवेक 'रफ़ीक'	29

स्तम्भ

स्वाति बूंदें	एकता, ब्रह्मर्षि रूप लाल जी	5
काव्य प्रवाह	कैलाश चन्द्र 'मासूम', शंभू मस्ताना	7
आत्ममंथन		8
बाल वाटिका	सरिता	26
गीत माधुर्य	अनिल कुमार सागर, बाबू–ओमी, अजय'बेजोड़'	28
सूचना–समाचार	विवेक 'रफ़ीक', संवाददाता	33
पाठक मंच	पाठकगण	40

सम्पादक (अवैतनिक)
राम कुमार 'सेवक'
कार्यालय : पत्रिका विभाग
सन्त निरंकारी मण्डल दिल्ली–110009
फोन 27605465-74,/224,225 फैक्स 27608215
वैबसाइट: http:www.nirankari.org
ई–मेल : patrika@nirankari.org
snm@nirankari.org

फोटोटाइप सैटिंग एवं मुद्रक
हृदय प्रिन्टर्स
सन्त निरंकारी कालोनी, दिल्ली–110009
कला सज्जा – निरंकारी आर्ट ग्रुप
फोटो : निरंकारी स्टूडियो

वार्षिक चन्दा
सदस्य/सेवादार : 60 रु.
वैधानिक चन्दा : 150रु.
एशिया/मिडिल ईस्ट : 600रु.
इंगलैण्ड : £10 यूरोप : €15
अमेरिका : $20, कनाडा/ऑस्ट्रेलिया : $25
सदस्य-चन्दा (अधिकतम 20 प्रतियां)
भारत/नेपाल : 600रु
एशिया/मिडिल ईस्ट : 8000रु.
इंगलैण्ड : £125, यूरोप : €200
अमेरिका : $225, कनाडा : $300
एक प्रति 7 रु

प्रकाशक एवं मुद्रक सीएल गुलाटी ने सन्त निरंकारी मण्डल, सन्त निरंकारी कालोनी, दिल्ली–9 के लिए, हृदय प्रिन्टर्स, सन्त निरंकारी कालोनी, दिल्ली–9 में मुद्रित करवाकर प्रकाशित किया।

नोट: लेखकों के विचारों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं

सम्पादकीय

लागा चुनरी पे दाग़.....

वर्षों पहले एक गीत सुनते थे कि – लागा चुनरी में दाग़, छिपाऊँ कैसे? सुनकर प्रायः ध्यान आता कि इसमें दाग 'हटाने' की बात क्यों नहीं कही गयी, सिर्फ 'छिपाने' की ही बात क्यों कही गयी है।

जन–जीवन में विचरण करते हुए मन–आत्मा पर अनेकों दाग़ जाने–अंजाने, लगते रहते हैं। दाग़ जब बहुत बढ़ जाते हैं तो छिपाने का कोई उपाय बचता ही नहीं।

.....फिर डर बात डर किसी से छिपती भी कहाँ है?

यद्यपि स्थूल आँखों से तो, सब कुछ नहीं दिखता। इन आँखों की एक सीमा है। इस सीमा से आगे बढ़ने के लिए विवेक की आँखें चाहिए।

दो आँखों वालों से तो दाग़ किसी प्रकार छिपाया भी जा सकता है लेकिन तीन आँखों वालों से कैसे छिपेगा? सन्तजनों की तो विवेक की भी आँख खुली होती है, उनसे कुछ छिपा पाना कठिन है लेकिन इस निरकार प्रभु की आँख तो रोम–रोम से झाँक रही है, इससे कुछ छिपा पाना तो बिल्कुल असम्भव है इसलिए 'छिपाऊँ कैसे' का प्रश्न ही खत्म हो जाता है।

नया प्रश्न पैदा होता है कि 'दाग़ हटाऊँ कैसे?' मन व आत्मा पर जो दाग़ ढ़ब्बे दिन रात लगते जा रहे हैं, उन्हें कैसे हटाऊँ?

यह कठिन समस्या तब और भी कठिन हो जाती है जब आगे से जवाब मिलता है कि अपना मन व आत्मा साफ करके आओ, तब प्रभु मिलेंगे।

वो लतीफा याद आता है कि बुखार के एक रोगी को किसी झोलाछाप डॉक्टर ने सलाह दी कि ठंडे पानी में स्नान कर लो। रोगी ने इससे निमोनिया होने की आशंका जताई तो डॉक्टर साहब बोले "उसका इलाज मेरे पास है, उसकी चिन्ता मत करो।"

जीवन में ऐसे गुरु भी मिलते हैं जो मर्ज और बढ़ा देते हैं लेकिन हमें सौभाग्य से ब्रह्मवेत्ता सद्गुरु मिले हैं। यथार्थ बताते हुए सम्पूर्ण अवतार बाणी में बाबा जी कहते हैं –

धोबी कपड़े धोवण लगयां, मैल कदे वी तकदा नहीं।
गुनहगार नूं बख़्शण लगयां, बख़्शनहारा थकदा नहीं।

कहते हैं कि एक कुशल धोबी के समान सद्गुरु, मानव आत्मा की मैल देखकर नाक–भौं नहीं सिकोड़ता बल्कि ब्रह्मज्ञान द्वारा दयालुतापूर्वक मन–आत्मा की चुनरी साफ कर देता है।

विश्व का कोई भी संविधान ऐसा नहीं जहाँ मन की कल्पना के स्तर पर अपराध करने के लिए सज़ा का प्रावधान हो अर्थात् संविधान के अनुसार किसी का बुरा सोचना कोई अपराध नहीं है लेकिन अध्यात्म में ऐसा नहीं है। यहाँ निर्णय परमात्मा करता है और परमात्मा से कुछ छिपा पाना असम्भव है इसलिए यहाँ बुरा सोचना भी अपराध की श्रेणी में आता है और उसकी भी सज़ा है।

ब्रह्मज्ञान प्राप्ति हेतु जब हम सद्गुरु की शरण में आये थे, उस समय मन व आत्मा पर जो दाग़ थे, वे उन्होंने हटा दिये। पिछले पाप तो क्षमा कर दिये। ब्रह्मज्ञान प्राप्ति के बाद के जो पाप हैं वो तो जान–बूझकर किये गये अपराधों की श्रेणी में आते हैं। उन्हें सद्गुरु क्षमा करेंगे या नहीं, यह उनका विशेषाधिकार है, हम तो सिर्फ याचना–प्रार्थना ही कर सकते हैं।

कच्चों अर्थात् अविश्वासी व्यक्तियों की संगति के परिणामस्वरूप जो दाग़ निरन्तर लग रहे हैं, उन्हें हटाने का उपाय तो निरन्तर सत्संग व सत्याचरण ही है।

❑ राम कुमार 'सेवक'
rksewak@yahoo.co.in

मानव पर्यावरण

● दमनेश कुमार(दिल्ली)

अगर हम ज्यादा दूर न जाकर केवल 40–50 वर्ष पूर्व की ही बात करें, उस समय के वातावरण एवं वर्तमान समय की तुलना करें तो मानव पर्यावरण में बहुत ही अन्तर प्रतीत होगा। इसके कई भिन्न–भिन्न कारण हो सकते हैं, परन्तु मुख्यत: मानव की वर्तमान परिस्थितियों के कारण उसकी सोच में जो बदलाव आया है, उसके कारण आज का मानव अधिकतर परेशान नज़र आता है।

मानवीय पर्यावरण को प्रदूषित करने हेतु पहला बड़ा कारण तो यह है कि हम अपनी संस्कृति व सभ्यता की महान परम्पराओं को भूलते जा रहे हैं। मुझे याद है कि बचपन में जब हम प्रात: उठते थे तो सर्वप्रथम अपने माता–पिता व बुजुर्गों के चरणों को छूकर उनका आशीर्वाद लेना अपना सौभाग्य समझते थे। आज यह शुभ प्रथा बहुत ही कम परिवारों में नज़र आती है। इसके भी कई कारण हैं – जैसे हमारी दादी जी व माता जी प्रात: रामायण, श्रीमद्भगवद्गीता आदि धार्मिक पुस्तकें पढ़ना अपने जीवन का अभिन्न अंग बनाए रखती थीं। यानि प्रात: काल से ही घर का वातावरण शुद्ध हो जाता था। समय–समय पर पारिवारिक एवं सामूहिक तौर पर हवन–यज्ञ भी लोग करवाया करते थे जो कि वातावरण को शुद्ध रखने में सहायक होते थे। आज के लोगों की दिनचर्या पर अगर नज़र डालें तो अधिकतर देखने में आयेगा कि सुबह उठते ही टी.वी., रेडियो, डैक आदि पर बस फिल्मी गीत, विदेशी संगीत आदि से ही आरम्भ होता है प्रात: काल का। विशेषकर आज की युवा पीढी तो हर समय अपने मोबाइल फोन से ही गाने सुनने में लगी रहती है तथा न जाने कितने अश्लील कार्य भी इस मोबाइल द्वारा किए जाते हैं। यह बात तो ठीक है कि *Music is the diet of mind,* परन्तु हर चीज का एक समय होता है तथा उसकी कोई सीमा भी निर्धारित करनी चाहिए। दूसरी बात रही खान–पान की – जरा हम सभी अपने मन से पूछें कि क्या हम सभी वास्तव में जीने के लिए खाते हैं या खाने के लिए जीते हैं?इस भौतिक शरीर को ठीक रखने के लिए जितने संतुलित आहार की आवश्यकता होती है मात्र वही लेना चाहिए, परन्तु समय व मात्रा का ध्यान रखना भी जरूरी है। गुरू नानक देव जी महाराज ने ऐसा फरमाया है कि –

छती फल अमृत भाऊ,
बाबा होर खाणा खुशी खुवार,
जित्त खादे तन पीड़िए,
मन में चलन विकार।

इस शब्द में चेताया गया है कि भगवान ने तो कई प्रकार के पदार्थ इन्सान के उपभोग के लिए बनाए हैं, परन्तु उनका जरूरत से ज्यादा उपयोग अथवा उन रागी पदार्थों का उपभोग करना जो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हों तो उन्हें खाने से शरीर में कष्ट होता है।

खाने के विषय में ऐसी बात भी कही जाती है कि – **जैसा अन्न, वैसा मन**। यानि कि हम जो भी आहार खाते हैं वह शुद्ध होना चाहिए तथा उसे अपनी मेहनत से ईमानदारी द्वारा कमाई करके ही बनाया गया हो। अन्न खाने के बाद जो विचार व भाव उत्पन्न होते हैं फिर वैसी ही मानव की सोच बनती है तथा आगे का जीवन उन भावनाओं पर ही आधारित होता है।

जीवन की सफलता अथवा असफलता इस बात पर भी निर्भर करती है कि मानव किस प्रकार की संगति का चुनाव करता है क्यों कि जैसी संगत, वैसी रंगत। व्यक्ति यदि अच्छी संगत में उठेगा – बैठेगा, अच्छी बातें ग्रहण करके जीवन में अपनाएगा तो वह अच्छे संस्कारों का संग्रह करता जाएगा। ऐसा जीवन जीते हुए वह अपने जीवन को तो सुखी व आनन्दित करता ही रहेगा साथ ही उसके सम्पर्क में आने वाले भी सुखी रहेंगे।

यह एक तथ्य है कि सभी प्रकार के धुएं से प्रदूषण उत्पन्न होता है। प्रदूषित वायु व जल को प्रयोग में लाने से, खाने–पीने की वस्तुओं में मिलावट करने व उन्हें खाने–खिलाने से मनुष्य के स्वास्थ्य में गिरावट आती है। ऐसे पदार्थ स्वास्थ्य को लगातार हानि पहुँचाते चले जा रहे हैं।

इन सबके अतिरिक्त एक घटक और भी है, जो हर पल मानव के मस्तिष्क को लगातार प्रदूषित करता रहता है वह है – ध्वनि प्रदूषण। हम दिनचर्या में जहाँ–जहाँ से भी गुजरते हैं, रागी प्रकार की ध्वनियाँ जो हमारे कानों से प्रवेश करती हैं वे मस्तिष्क में बहुत बड़ा प्रदूषण पैदा करती हैं, जो कि मानव के स्वास्थ्य को लगातार नुकसान पहुँचाने वाली होती हैं। कई देशों में वाहनों के हॉर्न बजाने पर पूरी पाबन्दी है। कई पश्चिमी देशों में तो कोई व्यक्ति अपने रेडियो, टी. वी. आदि की आवाज भी इतनी ऊँची नहीं कर सकता कि उसके पड़ोसी को सुनाई दे। यहाँ तक कि यदि कोई अपने बच्चे की पिटाई करे, बच्चा अगर घरवालों के विरूद्ध शिकायत दर्ज करवा दे तो पुलिस उनके विरुद्ध कार्यवाही कर सकती है। कुछ देशों के विषय में तो यह भी सुना है कि जो सोने के घंटे हैं उस दौरान वहाँ न तो कोई हवाई जहाज आएगा तथा न ही कोई उड़ान भरेगा यानि लोगों की सुख–सुविधा का इतना ज्यादा ध्यान रखा जाता है।

प्रश्न यह उठता है कि जहाँ पर्यावरण के प्रति इतनी चेतना नहीं है, वहाँ के प्रदूषित माहौल से मानव पर्यावरण को कैसे बचाया जाए? सर्वप्रथम मानव की विचारधारा बदले, मन में शुद्ध भाव पैदा हों, परहित व करुणा के साथ निष्काम भावना से प्रेरित होकर जनहित के लिए जीवन जिया जाये। मन में वैर–विरोध, नफ़रत–निन्दा व द्वेष के स्थान पर दूसरों के प्रति प्रीत, विशालता, हमदर्दी, आपसी भाईचारा व मिलवर्तन की भावना आ जाए। ऐसा करने से सभी एक–दूसरे के दुःख–दर्द, खुशी–ग़मी में शामिल होकर सुखमय जीवन जीते हुए इस धरा को स्वर्ग बना सकेंगे।

अन्ततः हम इसी निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि वास्तव में मनुष्य के मन की अवस्था शान्त तभी बन सकती है जब वह सद्गुरु की कृपा से इस परब्रह्म परमात्मा को जानकर सच्चे मन से इसकी भक्ति करे। जब मन में ऐसा भाव आ जाएगा कि यह प्रभु परमात्मा तो निराकार है परन्तु सभी मनुष्यों आदि जीवों को बनाने वाला यही है अतः **नर सेवा नारायण पूजा** का भाव ही जीवन के सुख का आधार है। सभी के साथ भाईचारे का नाता जुड़ना चाहिए ताकि सभी शान्त चित्त का अनुभव करें। शान्त मन वाला व्यक्ति ही सकारात्मक दृष्टिकोण से मन–वचन–कर्म द्वारा मानवता के प्रति सदैव हृदय से समर्पित रहेगा। ऐसा जीवन जीने से वह अपनी ज़िन्दगी तो सकून के साथ जिएगा ही साथ ही दूसरों के लिए भी हमेशा खुशियों का ही प्रदाता होगा। जब समाज का प्रत्येक व्यक्ति खुशहाली से जीवन जीता जाएगा तो समस्त देश खुशहाल रहेगा तथा मानवता सुरक्षित रहेगी। अतः इस समय मानव पर्यावरण का एकदम शुद्ध होना सारी मानवता के हित में है।

उपर्युक्त वातावरण तभी निर्मित हो सकता है जब कोई रहबर आकर हमें यह सिखाए कि हम सभी एक ही पिता की सन्तानें हैं तथा सभी आपस में भाई–बहन हैं और जियो और जीने दो की भावना से जीवन को जीना है।

आज के युग में सन्त निरंकारी मिशन एक ऐसा मंच है, जो ब्रह्मज्ञान द्वारा विश्व–बन्धुत्व की भावना पैदा करके सभी वर्णों को एक साथ मिलकर रहने का पाठ पढ़ाता है। सभी मिलकर एक साथ प्रभु का यशोगान करते हैं तथा सभी के दुःख–सुख में शामिल होकर अमन व शान्ति से जीवन जीते हुए सदैव मानव कल्याण में लगे रहते हैं। निरंकारी बाबा हरदेव सिंह जी महाराज पूरी मानवता को ऐसा ही उपदेश अपने व्यवहारिक जीवन से देते चले जा रहे हैं। ✸

स्वाति बूँदें

✣ निरंकार तक पहुँचने की पहली सीढ़ी है – निरंकार पर विश्वास करना और अन्तिम सीढ़ी है – इस विश्वास को कायम रखना।

✣ यदि मानव जुबान को वश में कर ले तो शेष इन्द्रियाँ सहज ही वश में हो जाएंगीं।

✣ निरंकार – सद्गुरु की कृपा उसी को प्राप्त होती है, जिसका अन्तःकरण शुद्ध और पवित्र होता है। जो सत्य के मार्ग पर चलता है। सुख हो या दुःख, हर पल वह हर कार्य निरंकार प्रभु की रज़ा समझकर करता है।

✣ आत्मसमर्पण किये बिना प्रभु निर्भर नहीं हुआ जा सकता और स्वार्थ – मोह आदि को छोड़े बिना आत्मसमर्पण नहीं होता।

✣ जिस मनुष्य का मन प्रभु भक्ति व चिन्तन की ज्योति से प्रकाशित है और जिसमें सदा प्रभु का ही विश्वास भरा है, वही सच्चा ज्ञानी है।

✣ निरंकार प्रभु से जुड़ने का भाव है – सेवा, सुमिरण, सत्संग से जुड़े रहना।

✣ भक्ति, निरंकार व सद्गुरु के प्रति पूर्ण समर्पण व दृढ़ विश्वास का नाम है।

✣ ब्रह्मज्ञान केवल शब्दों तक सीमित नहीं, जो सिर्फ कहने–सुनने तक सीमित हो। ब्रह्मज्ञान तो वह आत्मिक बोध है, जो जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाता है।

✣ सद्गुरु व साध संगत की सेवा किये बिना निरंकार प्रभु पर विश्वास नहीं आ सकता।

✣ जो व्यक्ति अपनी जीवात्मा को सद्गुरु के द्वारा परमात्मा से मिला ले, वही वास्तव में सन्त है।

✣ सत्संग, ज्ञान की वह गंगा है, जहाँ मायावी प्रभावों की मैल धुलती है और मन इस शुद्ध व पावन निरंकार–सद्गुरु के साथ जुड़कर शुद्ध व पावन हो जाता है।

❒ एकता (वारसा)

याद रखो!

● परमात्मा एक है, परमात्मा के सिवाय और कुछ भी नहीं। अतः एक परमात्मा के सिवाय किसी और को न मानो।

● यह तन, मन एवं धन ईश्वर प्रदत्त हैं। इन्हे ईश्वर का ही समझो।

● ये सम्प्रदाय, धर्म एवं जातियाँ सब व्यर्थ हैं। तुम इनके बन्धनों से मुक्त रहो और अपना धर्म केवल इन्सानियत समझो।

● किसी अन्य से घृणा न करो क्यों कि जब तुम स्वयं दूसरे के हो तो फिर तुम्हें किसी पर किसी प्रकार की आपत्ति क्यों?

● इस संसार की सेवा के लिए इस दुनिया मे रहो। इस ससार का परित्याग कर भीरुता का प्रमाण मत दो।

● तुम हर मनुष्य का आदर–सत्कार करो और उसमें जो भी सद्गुण हों उनका सम्मान करो।

● समस्त प्राचीन धर्म–ग्रन्थों को सत्य मानो। उनमें वर्णित वास्तविकता को समझकर उसको अमल में लाओ। केवल बातें बनाने से कुछ न होगा।

● नर पूजा नारायण पूजा अर्थात् प्राणीमात्र की सेवा ही ईश्वर की सच्ची सेवा है।

● केवल ईश्वर ही सत्य है और इस सत्य को जाने बिना तुम इन नियमों में से किसी भी नियम को जीवन में ढाल नहीं सकते, अतः ज्ञान प्राप्त करो।

❒ ब्रह्मर्षि रूप लाल जी

विशेष निवेदन

पत्रिका का वार्षिक शुल्क समय पर अदा करना भी एक सेवा है। कृपया पत्रिका का शुल्क समय पर भेजकर सहयोग करें ताकि पत्रिका निरन्तर आपको मिलती रहे,

– प्रभारी, पत्रिका विभाग

कर्म व चमत्कार

❑ गोपी चन्द डोगरा (राजगढ़)

जब मनुष्य सद्गुरु की शरण में आता है व उसे निराकार के दर्शन होते हैं तो हमें संगतों में अवसर यह सुनने को मिलता है कि किस तरह सद्गुरु की कृपा से उनके जीवन में अप्रत्याशित परिवर्तन देखने में आया है। सद्गुरु की कृपा ने उनके जीवन को खुशहाल किया है। वास्तव में ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति के उपरान्त गुरसिख की सोच सकारात्मक बन जाती है और वह अपने हर कार्य की सफलता का कारण सद्गुरु को ही मानता है, जो कि सत्य व शाश्वत है लेकिन मुश्किल तब शुरु होती है जब हम कर्म से विमुख होकर यह मानने लगते हैं कि कोई न कोई चमत्कार घटित होगा व हमें सद्गुरु बचा लेगा, हमारे सभी बिगड़े कार्य बिना किसी मेहनत व प्रयास के एक ही चुटकी में चमत्कार द्वारा पूर्ण हो जाएंगे। इस प्रकार की भावना हमारी भक्ति के मार्ग में रुकावट ला देती है व हम भक्ति से दूर होते चले जाते हैं।

निरंकारी बाबा हरदेव सिंह जी महाराज ने हमें सहज भक्ति प्रदान की है व हमारा यह परम कर्तव्य है कि हम कर्म करते हुए सहज भाव से अपना जीवन व्यतीत करें। किसी भी प्रकार के चमत्कार की आशा न रखें। चौथे प्रण में भी स्पष्ट रूप से युगपुरुष बाबा अवतार सिंह जी महाराज ने कर्म को प्रधानता देते हुए फरमाया है कि –

दसां नहां दी किरत कमाणी,
नहीं बण्णा दूजे ते भार।

राम चरित मानस में भी लिखा है –

कर्म प्रधान विश्व करि राखा,
जो जस करहिं तस फल चाखा।

तथा

सकल पदारथ हैं जग माहीं,
कर्महीन नर पावत नाहीं।

सहज भक्ति के बारे में भक्त कबीर जी भी फरमा रहे हैं कि

सन्तों सहज समाधी भली,
आँख न मुंदू कान न रुंधू, काया कष्ट न धारूं,
खुले नयन से हँस–हँस देखूं, सोहणा रूप निहारुं।

इसी प्रकार युगप्रवर्तक बाबा गुरबचन सिंह जी महाराज ने भी चमत्कार के बारे में कहा है कि–

बच्चों को अपने जीवन की मिसाल के द्वारा शिक्षा देनी चाहिए ताकि बच्चे किसी चमत्कार या किस्मत की तरफ न झाँकते रह जाएं।

❑जीवन्त शिक्षक (पृष्ठ–5)

प्रत्येक गुरसिख का यह परमकर्तव्य बन जाता है कि वह सेवा, सुमिरण व सत्संग का इन्तजार करे। निःसंदेह सद्गुरु समर्थ होता है लेकिन एक सच्चा गुरसिख वही होता है जो सद्गुरु के आदेशानुसार अपना जीवन व्यतीत करता है व कर्म करने में विश्वास रखता है। बाबा गुरबचन सिंह जी महाराज ने इस स्थिति को स्पष्ट करते हुआ फरमाया है –

मैं तो सिर्फ इतना ही कहना चाहता हूँ कि लोग अगर सुख की ज़िंदगी जीना चाहते हैं तो उन्हें किसी चमत्कार या किस्मत का इन्तजार नहीं करना चाहिए, बल्कि कुदरत के कानून के मुताबिक जिस मेहनत, ईमानदारी, नेकनीयत और लगन की जरुरत है, उससे कभी भी जी चुराने की कोशिश नहीं करनी चाहिए।

❑जीवन्त शिक्षक (पृष्ठ–9)

पिछले जन्मों के संस्कार मनुष्य के मददगार भी होते हैं और रुकावट भी बन सकते हैं, पर आदमी अपने इन संस्कारों को अपने वर्तमान के कर्मों द्वारा नई दिशा दे सकता है।

आदमी अपनी तकदीर को अपनी तदबीर, गुरु की कृपा और सन्त–महापुरुषों के आशीर्वाद द्वारा बदल सकता है।

❐जीवन्त शिक्षक (पृष्ठ–5)

संसार का हर व्यक्ति सुखी होना चाहता है परन्तु इस परम रहस्य का पता महात्माजन ही जानते हैं कि –

सुख किते नी मिलदा जी,
सुख सत्गुरु दी शरणी।

सही अर्थों में वक्त के सद्गुरु के दरबार में आकर व ब्रह्मज्ञान की इलाही दात पाकर ही इस परम सत्य का बोध होता है। दातार कृपा करे कि हम सभी सहज भक्ति, ज्ञान व कर्म के संयोग तथा सेवा, सुमिरण व सत्संग करते हुए अपना जीवनयापन करें व सद्गुरु की रहमत के पात्र बनें। जहाँ तक चमत्कार की बात है तो यह बात मन में बिठा लें कि मानव शरीर का मिलना, हमारे पिछले सभी कर्मों का बख्शा जाना, अपात्र होते हुए भी ब्रह्मज्ञान प्राप्त होना व हमारी साँसों का चलना यह सभी सद्गुरु द्वारा किए गए व्यवहारिक चमत्कार का ही तो परिणाम है।

वास्तव में एक गुरसिख का यही धर्म बन जाता है कि वह अपने सद्गुरु के मानवता के संदेश को जन–जन तक पहुँचाने में प्रयासरत रहे व धर्म, जाति व मजहब के आधार पर दिलों में पनप रही नफ़रतों के स्थान पर प्यार भर दे, तभी सही मायनों में हम मानव समाज में शांति, भाईचारे व सहिष्णुता की स्थापना कर पाएंगे, जैसा कि एक कवि ने कहा है कि –

जो नफ़रतों की जगह दिल में प्यार आ जाए,
तो ज़िंदगी की फिज़ाँ में बहार आ जाए।
दिलों से मिटा दें गर फर्क तेरे–मेरे का
तो चैन में ये दिले बेकरार आ जाए। ❖

काव्य प्रवाह

सत्गुरु के जब इशारे हो गये।
पासा में रब के नज़ारे हो गये।
जब मिली इस रहनुमाँ की रहमतें,
ज़िन्दगी में वारे–न्यारे हो गये।
ज़िन्दगी पहले थी मेरी तंगदिल,
अब हमारे ये सहारे हो गये।
प्यार की खुशबू मिली है जब हमें,
दूर दिल से ग़म हमारे हो गये।
पा गया 'मासूम' राज़–ए–हक़ कोई,
खाक से जर्रे सितारे हो गये।

❐कैलाशचन्द्र 'मासूम' (शमशाबादी)

ग़मख़्वार मैंनूं मिल गया.....

ज़िन्दगी दे सुख–दुख दा, भागीदार मैंनूं मिल गया।
बदल गए रुख हवावाँ दे, ग़मख़्वार मैंनूं मिल गया।
लग्गी सी मुद्दतां तों भटकन, है शांत ओह हो गई,
फट्ट दिल दे मिट गये, दिलदार मैंनूं मिल गया।
सार नहीं सी इश्क दी, मैं अल्लडपुणे विच ला बैठा,
ऐपर तोड़ निभावण वाला, दावेदार मैंनूं मिल गया।
रूह नूं सुहागण होण दा, दुण माण वी नसीब है,
सोहणा बख्शेया माही ने, श्रृंगार मैंनूं मिल गया।
एह इसदा ही करिश्मा है, बदली है मेरी किस्मत जो,
प्रतख वेखां रब नूं ते, साकार मैंनूं मिल गया।
लोक मन दी शांति खातिर, कित्थे–कित्थे नहीं दौड़दे,
है जो मसीहा अमन दा, दातार मैंनूं मिल गया।
तूफान दा कोई खतरा नहीं, विश्वास मेरा बोलदा,
लभदी है दुनिया जिसनूं, परिवार मैंनूं मिल गया।
मुश्किलां वी घर मेरे तों, सिर झुका के मुड़ गईआं,
इस सर्व उच्ची शक्ति दा, आधार मैंनूं मिल गया।
दाग़ गुनाहां वाले धो के, सन्त बणाया रहबर ने,
रीझां नाल निभावां शम्भू, जो किरदार मैंनूं मिल गया।

❐शंभू मस्ताना (मानसा, पंजाब)

आत्ममंथन

अपना ज्ञान बढ़ाएं

सामयिक/ऐतिहासिक/साहित्यिक

1. 'मस्त मलंगा' नामक कार्यक्रम सन्त निरंकारी मिशन की ओर से किस संचार माध्यम द्वारा प्रसारित होता है?
अ–जी टी.पी. द्वारा ब–इंटरनेट रेडियो 'वॉइस डिवाइन' द्वारा स–सन्त निरंकारी पत्रिका द्वारा द–आस्था चैनल द्वारा

2. 'सन्त' नामक पुस्तिका किस सन्त–साहित्यकार ने लिखी थी?
अ–'निर्मल' जोशी जी ब–पूर्ण प्रकाश जी 'साकी' स–ज्ञान सिंह जी 'महरम' द–बलवन्त सिंह जी 'कमला'

3. सुजानपुर टिब्बा में आयोजित हि.प्र. के राज्य स्तरीय सन्त समागम का आयोजन इस बार कितने वर्ष के अन्तराल से हुआ?
अ–4 वर्ष ब–3 वर्ष स–2 वर्ष द–5 वर्ष

4. बाबा हरदेव सिंह जी व पूज्य माता सविन्दर जी की नवजात दोहती (सुपुत्री–समता जी व संदीप खिंडा जी) का नाम समप्रीति रखा गया है। इस बालिका का जन्म कहाँ हुआ है?
अ–दिल्ली में ब–बर्मिंघम (इंग्लैण्ड) में स–गुड़गाँव में द–मुंबई में

5. सन्त निरंकारी मिशन के पुराने प्रचारक महात्मा लाल चन्द जी, जिन्हें 'लालो' जी कहा जाता था, का सम्बन्ध निम्नांकित में से कौन से स्थान से है?
अ–कोल्हापुर ब–बुरहानपुर स–शोलापुर द–श्रीरामपुर

6. कुलजस राय जी 'साबिर' का सम्बन्ध मुख्यतः साहित्य की किस विधा से था?
अ–गद्य ब–काव्य स–रिपोर्ताज द–व्यंग्यकार

7. सन्त निरंकारी मंडल में श्री पी.एस.चीमा को क्या सेवा दी गयी है?
अ–प्रकाशन विभाग की ब–सुरक्षा व समाज कल्याण विभाग से सम्बन्धित स–वित्त व लेखा अनुभाग द–रिसेप्शन

धार्मिक/आध्यात्मिक

8. श्री रामकृष्ण परमहंस के गुरु तोतापुरी जी का सम्बन्ध साधुओं के किस समूह से था?
अ–नागा ब–अद्वैतमार्गी स–अवधूत द–अघोरी

9. श्री रामकृष्ण परमहंस की धर्मपत्नी का नाम क्या था?
अ–दमयन्ती ब–गायत्री स–शारदा द–सरस्वती

10. "हे राम जी! मेरु के शिखर से लेकर, नीचे तक गंगा का प्रवाह चले तो उसके 'बालू के कण चाहे गिने जा सकें परन्तु सांसारिक विषय–वासना में लगे जीवों के शरीरों की संख्या नहीं गिनी जा सकती।' यह वचन किस महात्मा का है?
अ–विश्वामित्र जी ब–वशिष्ठ जी स–माता कौशल्या जी द–सुमन्त्र जी

11. ज़कात का सम्बन्ध किस धर्म से है?
अ–इस्लाम से ब–ईसाइयत से स–यहूदी धर्म से द–पारसी धर्म से

12. निम्नांकित में से किस स्थान का सम्बन्ध सीता जी की अग्नि परीक्षा से है?
अ–लंका ब–अयोध्या स–रामेश्वरम द–मिथिला

13. श्री गुरु नानक देव जी का प्रारम्भिक शिष्य मरदाना, रबाब बजाकर भिक्षा मांगता था। गुरु जी ने उसे किस कार्य के लिए प्रेरित किया था?
अ–मेहनत–मजदूरी करने के लिए ब–प्रभु की स्तुति करे, भरण–पोषण की चिन्ता उन (गुरु जी) पर छोड़ दे स–दुकानदारी करने के लिए द–कला विद्यालय चलाने के लिए

नैतिक/वैचारिक

14. सत्संग में मिलने वाला (खाद्य) प्रसाद कितनी मात्रा में लेना चाहिए?
अ–परिवार का ध्यान रखकर ब–स्वयं के पेट भरने का ध्यान रखकर स–जितना ज्यादा प्रसाद, उतनी ज्यादा प्रभु कृपा द–सहज भाव से जो मिले वही पर्याप्त है।

15. काम, क्रोध, लोभ, मोह व अहंकार के साथ किस प्रकार का व्यवहार उचित है?
अ–घृणा का ब–त्याग का स–समर्पण का द–आत्मनियंत्रण व संयम का

(सही हल अन्यत्र दिये गये हैं)

प्रार्थना एक यथार्थ

❐ आर.के.'प्रिय'

विश्व दर्शन में प्रार्थना का एक अद्वितीय स्थान है। लगभग हर व्यक्ति कभी न कभी प्रार्थना अवश्य करता है। मात्र भक्त–सन्त–महात्मा ही नहीं, अपराधी व समाजविरोधी तत्व भी प्रार्थना करते पाए गये हैं। यह दूसरी बात है कि वे इसमें वैसे नहीं रम पाते जैसे कि सन्त–महात्मा इसका आनन्द लेते हैं लेकिन उसका असर तो मनोमस्तिष्क में स्वीकार करते ही हैं। आतंकवादी तक अपने ध्येय की सफलता के लिए प्रार्थना की ओर अग्रसर हुए हैं।

जीवन में कोई न कोई क्षण ऐसा अवश्य आता है जब कि मनुष्य कर्म की दौड़ से थककर थोड़ी देर विश्राम करना चाहता है। कोई क्षण आता है जब उसे लगता है कि जब मैं माता की गोद में था, इस दुनिया में आया था, तब वह दौड़ नहीं थी और जब धरती माता की गोद में दफना दिया जाऊंगा या जला दिया जाऊंगा, तब भी कोई दौड़ नहीं होगी।

यह एक क्षण का उजाला यदि मनमत के गहरे–मोटे आवरण को बेधकर विवेक के द्वारा निर्णायक शक्ति तक पहुँच जाता है तो जीवन में क्रान्ति घटित हो जाती है। जीवन की दिशा बदल जाती है। दिशा बदल जाती है तो दशा अपने आप बदल जाती है। अनेकों विपरीत मार्ग पर चलने वाले एक ही झटके में सन्त बनते देखे गये हैं, इसी क्षण का उपयोग करके।

महत्ता उस क्षण के समय की है। पुराणों में कथा आती है कि पेड़ पर बैठा पक्षी देख रहा है कि शिकारी धनुष पर बाण चढ़ाए तैयार खड़ा है, उसकी जीवन लीला समाप्त करने के लिए। ऊपर बाज घूम रहा है कि पक्षी को मारकर खा जाऊँ। ऊपर–नीचे, मृत्यु ही मृत्यु। आर्त पुकार हृदय से निकली –

अबके राखि लेहु भगवान।

हे प्रभु! रक्षा करो! निर्मल हृदय की पुकार प्रभु तुरन्त सुनता है। अचानक ही बिल से निकले साँप ने शिकारी को डंक मारा। तीर ऊपर उड़ रहे बाज को लगा। दोनों बाधाएं हटीं, पक्षी का जीवन बच गया। वह आर्त पुकार ही प्रार्थना हो गयी। शब्द नहीं भाव ही मुख्य थे। द्रोपदी ने कौन से शब्दों में प्रार्थना की थी, कि साड़ियों के ढेर लग गये। वास्तव में वह एक निर्मल हृदय की पुकार ही तो थी और साथ ही प्रभु पर एक दृढ़ भरोसा था कि यह मेरी लाज बचा लेगा। महत्ता उन शब्दों की नहीं है बल्कि हृदय की पवित्रता व विश्वास की दृढ़ता की है। आइए देखें, विश्व के महान विचारक इस सम्बन्ध में क्या कहते हैं –

✖ प्रार्थना शब्दों या कानों का व्यायाम मात्र नहीं है, खाली मंत्र जाप नहीं है। आप कितना ही राम नाम जपिए, अगर उससे आत्मा में हलचल नहीं मचती तो वह व्यर्थ है। प्रार्थना में शब्दों के बिना हृदय होना, हृदय के बिना शब्द होने से बेहतर है। वह स्पष्ट रूप से आत्मा की तड़पन के जवाब में होनी चाहिए

–महात्मा गाँधी

✖ God hears no more than the heart

speaks, and if the heart be dumb, God will certainly be deaf. **-T.Brooks**
(भगवान तो सिर्फ दिल की भाषा ही सुनते हैं। यदि दिल गूंगा हो तो भगवान भी बहरे हो जाते हैं – टी.ब्रुक्स)

*** जब तू प्रार्थना करे तो कपटियों के समान न हो क्यों कि लोगों को दिखाने के लिए सिर्फ सभाओं में और मोड़ों पर खड़े होकर प्रार्थना करना उन्हें अच्छा लगता है। मैं तुमसे सच कहता हूँ कि वे अपना प्रतिफल पा चुके।**

–मत्ती रचित सुसमाचार (6–5)

येषां त्वन्तगतं पापं जनानां पुण्यकर्मणाम्।
ते द्वन्द्वमोहनिर्मुक्ताः भजन्ते मां दृढ़व्रताः।।

–श्रीमद्भगवद्गीता (7/28)

निष्काम भाव से श्रेष्ठ कर्मों का आचरण करने वाले जिन लोगों का पाप नष्ट हो गया है, उन राग–द्वेष जनित, द्वन्द्व(रूप–मोह) से मुक्त दृढ़निश्चयी भक्तों की प्रार्थना में रुचि होती है।

*** यो जागार तमृचः कामयन्ते,**
यो जागार तमु सामानि यन्ति।
यो जागार तमयं सोम आह,
तवाहमस्मि सख्ये न्योकाः ।।

सदा सावधान रहकर जो परिश्रम–पुरुषार्थ करता है, उसे स्तुतियाँ प्राप्त होती हैं। संसार के सब भोग्य पदार्थ 'हम तुम्हारे हैं, हम तुम्हारे हैं', कहते हुए खुशी से उसकी सेवा में हाजिर होते हैं।

*** प्रार्थना करने वाला व्यक्ति अपने मन में शान्ति का अनुभव करेगा और संसार के साथ भी उसका सम्बन्ध शान्ति का होगा। जो मनुष्य प्रार्थनापूर्ण हृदय के बिना सांसारिक कर्म करेगा, वह स्वयं भी दुःखी होगा और संसार को भी दुःखी करेगा**

–महात्मा गाँधी

* प्रार्थना पुरुषार्थ का बोझ हलका करती है। सिर्फ पुरुषार्थ से ही सब काम नहीं बन जाते। गाड़ी के पहियों में यदि तेल व चिकनाई न हो तो वे रगड़ उत्पन्न करेंगे और बैलों के लिए भी उन्हें खींचना कठिन होगा। पुरुषार्थ बेशक परमआवश्यक है लेकिन पहिए को जैसे चिकनाई चाहिए, और नाव को जल व प्रवाह चाहिए उसी प्रकार पुरुषार्थ को प्रार्थना चाहिए। प्रार्थना धर्म के प्रति अनुराग तथा सत्य एवं न्याय के प्रति अटूट श्रद्धा उत्पन्न करके सब भयों और चिन्ताओं को दूर करती है और कर्तव्य पालन के लिए अपरिमित उत्साह उत्पन्न करती है।

–प्रार्थना दीप

प्रार्थना के मुख्य रूप से दो प्रयोजन हैं–

क – परमेश्वर की इच्छाओं और आदेशों को ठीक तरह से समझना।

ख – उन इच्छाओं व आदेशों के अनुसार आचरण करने का बल प्राप्त करना।

उपर्युक्त से स्पष्ट है कि प्रार्थना करने वाले व्यक्ति का जीवन अपेक्षाकृत सुगमता से व्यतीत होता है जब कि जो प्रार्थना नहीं करते वे जीवन को कठोर व कटु रूप में अनुभव करते हैं।

सन्त निरंकारी मिशन, जीने का जो सूत्र प्रदान करता है, उसका केन्द्रीय भाव है – सुमिरण। यह सुमिरण बहुत सरल है –

तू ही निरंकार,
मैं तेरी शरण हां,
मैनूं बख्श लो।

बहुत ही सरल शब्दों में निरंकार (प्रभु) को सामने देखकर, समर्पण व क्षमा याचना का भाव जहाँ हृदय को निर्मलता की ओर अग्रसर करता है, वहीं जीवन को सरल भी बनाता है। इस सुमिरण में प्रार्थना इस प्रकार समाहित है, जैसे लकड़ी में आग, दूध में घी अथवा स्थूल में सूक्ष्म।

आज निरंकारी बाबा हरदेव सिंह जी महाराज व्यवहारिक जीवन द्वारा हर व्यक्ति को प्रार्थना का मर्म समझा रहे हैं। वे कहते हैं –

सबका भला करो भगवान,
सबका सब विधि हो कल्याण। ❖

कुछ प्रार्थनाएं

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःख भाग्भवेत्।।
सब सुखी हों। सब निरोग हों। सब तरफ कल्याणकारी दृश्य हों। किसी को कोई दुख न हो।

हे समरथ परमात्मा, हे निर्गुण निरंकार।
तू कर्ता है जगत का तू सबका आधार।
कण–कण में है बस रहा तेरा रूप अपार।
तीन काल है सत्य तू मिथ्या है संसार।
घट–घट वासी हे प्रभु अविनाशी करतार।
दया से तेरी हों सभी भव–सागर से पार।
निराकार साकार तू जग का पालनहार।
है बेअन्त महिमा तेरी दाता अपरम्पार।
परम पिता परमात्मा सब तेरी सन्तान।
भला करो सबका प्रभु सबका हो कल्याण।

हे (सब कुछ करने में) समर्थ परमात्मा, हे (वर्ण आदि से रहित) निरंकार! तू ही इस जगत का (निर्माता व पालन) कर्ता है। तू ही सबका आधार है। तेरा असीमित रूप (सौन्दर्य) कण–कण में विद्यमान है। तू (अतीत, वर्तमान व भविष्य की सीमाओं से परे) सत्य है। इसके विपरीत संसार क्षणभंगुर है।

निराकार व साकार भी तू ही है। हे जगत पोषक परमात्मा! जैसे तू असीम है, वैसे ही तेरी महिमा भी असीम है।

हे परमपिता! सब जीव तेरी ही सन्तानें हैं। तू ऐसी कृपा कर कि सबका भला व कल्याण हो।

ॐ जय जगदीश हरे,
भक्तजनों के संकट क्षण में दूर करे.....
ॐ जय जगदीश हरे,
जो ध्यावे फल पावे, दुख विनशे मन का,
सुख–सम्पत्ति घर आवे, कष्ट मिटे तन का।
मात–पिता तुम मेरे, शरण गहूँ किसकी?
तुम बिन और न दूजा, आज करूं किसकी?
तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी,
पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी।
तुम करुणा के सागर, तुम पालन कर्ता,
मैं मूरख खल–कामी, कृपा करो भर्ता।
तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति,
किस विध मिलूँ गुसाईं, तुमको मैं कुमति।
दीन बन्धु – दुःखहर्ता, ठाकुर तुम मेरे,
अपने हाथ बढ़ाओ, द्वार पड़ा तेरे।
विषय–विकार मिटाओ, पाप हरो देवा,
श्रद्धा – भक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा।

असतो मा सद्गमय,
तमसो मा ज्योतिर्गमय,
मृत्यो मा अमृतंगमय।

मुझे असत्य से सत्य की ओर ले चलो। अन्धकार से प्रकाश की ओर ले चलो। मृत्यु से अमरत्व की ओर ले चलो।

◆ एक ओंकार सतनाम करता पुरख, निर्भौ, निर्वैर, अकाल मूरत, अजूनी, सैभं, गुरप्रसाद जप।

◆ आदि सचु, जुगादि सचु, है भी सचु, नानक होसी भी सचु

(ईश्वर एक है। इसका नाम सच्चा है। यह सबको पैदा करने वाला है। इसे किसी का डर नहीं, न किसी से दुश्मनी है। यह कभी मरने वाला नहीं। इसे किसी ने पैदा नहीं किया। यह आदि काल में भी था, उससे पहले भी था और,(श्री गुरु नानक देव जी फरमाते हैं कि) हे नानक! यह सदा ही रहेगा।)

✖ "हे हमारे पिता! तू जो स्वर्ग में है, तेरा नाम पवित्र माना जाये। तेरा राज्य आये, तेरी इच्छा जैसे स्वर्ग में पूरी होती है, वैसे ही इस पृथ्वी पर भी हो। हमारी दिन भर की रोटी आज हमें दे।

जिस प्रकार हमने अपने अपराधियों को क्षमा किया है, वैसे ही तू भी हमारे अपराधों को क्षमा कर और हमें परीक्षा में न डाल परन्तु बुराई से बचा, क्यों कि राज्य, पराक्रम और महिमा सदा तेरे ही हैं। आमीन!"

"अपनी पवित्र सत्ता की सद्प्रेरणा द्वारा हमारे मन के विचारों को पवित्र बना ताकि हम पूर्ण रूप से तुझे प्यार कर सकें तथा तेरे पवित्र नाम की सुयोग्य रीति से स्तुति कर सकें।"

–पवित्र बाइबल (नया नियम)

अल्लाह के नाम पर, जो सबसे बड़ा दयालु और कृपालु है। धन्य है अल्लाह, जो सारी जगहों को बनाने वाला है। जो दयालु और कृपालु है। जो कयामत (महाप्रलय) के दिन का मालिक है। हम तेरी ही इबादत (उपासना) करते हैं। तू हमें सीधे रास्ते पर ले चल। उनके रास्ते पर जिन्हें तेरा प्रसाद मिला अर्थात् जिनको तेरा आशीर्वाद प्राप्त है। उनके रास्ते पर नहीं, जिन पर तेरा कहर नाज़िल हुआ अर्थात् जो रास्ते से भटक गये हैं। आमीन!

(पाक कुरआन, सूरा फातिहा)

◆ जीवन की पवित्रता का स्थान सबसे ऊँचा है। यही सच्चा आनन्द है। मोक्ष उसी के लिए है, जिसका जीवन पवित्रता से भरपूर है।

हमारा जीवन धार्मिक हो। धन्य है वह, जो अहूरमज़्दा के लिए काम करते हैं। मनुष्य की सेवा ही ईश्वर का कार्य है।

जो गरीबों की मदद करता है वह अहूरमज़्दा को प्राप्त करता है।

जो सत्य का पालन करता है, जो प्रेम धर्म को पहचानता है, वह अहूरमज़्दा को प्राप्त करता है। **(पारसी धर्म से)**

तेरी ओट सहारा तेरा तन–मन घोल घुमावां
कहे 'अवतार' तेरे ही दाता दिन–राती गुण गावां
इक तूही निरंकार, इक तूही निरंकार।।
मैं हां सदा भुल्लनहार–2
तू है दाता बख्शनहार–2
मेरे अवगुण न चितार–2
इक तूही निरंकार, इक तूही निरंकार।।
तेरा रूप है एह संसार–2
सब दा भला करो करतार–2
मेरी मंग है एह दातार–2
इक तूही निरंकार, इक तूही निरंकार।।
मेरा डोले न ऐतबार–2
बख्शो श्रद्धा, भक्ति, प्यार–2
करूँ मैं सन्तों दा सत्कार–2
इक तूही निरंकार, इक तूही निरंकार।।

प्रार्थना

❑ डॉ. दर्शन सिंह (बांदा, उ.प्र.)

मैं तेरी शरण हूँ इसका अर्थ है कि मैं पूर्णरूपेण आपकी शरण में हूँ अर्थात् मेरा अस्तित्व पूर्णरूपेण आपके आगे समर्पित है। हे परमात्मा! अब तेरी मर्जी। तेरी मर्जी का अर्थ है कि जैसा तू बिठाए, वैसे मैं बैठूं, जैसा तू उठाए मैं उठूं, जो तू कराए मैं करूं। अपने को बीच में न लाऊँ। अगर तू भटकाए तो भटकूं, अगर तू पहुँचाये तो पहुँचूँ।

मैं वह भी अड़चन बीच में न खड़ी करूं कि इससे तो मैं भटक जाऊँगा। मैं अपने निर्णय को हटा लूँ।

भगवान श्री कृष्ण इसी बात को गीता में अर्जुन से कहते हैं –

सर्वधर्मान्परित्यज्य, मामेकं शरणं व्रज

हे अर्जुन, तू सब धर्मों को छोड़कर मेरी शरण में आ जा।

इसी बात को गुरू नानक देव जी कह रहे हैं –

जो तुधु भावै साईं भली कार,
तू सदा सलामत निरंकार

अर्थात् जो तुझे भावे वही भला, जो तुझे भाये वही मार्ग, जो तेरी चाह है वही सच और अब मैं कोई कसौटी न लाऊँ। तू भटकाये तो समझूँ यही मार्ग है। तू अंधेरे में ले जाये तो समझूँ यही रोशनी है। तू दिन को रात कहे तो रात कहूँ। इन धर्मग्रन्थों की कथनी, मेरी करनी बन जाए।

ऐसी स्थिति तन, मन, धन के श्रद्धापूर्वक समर्पण से ही सम्भव है क्यों कि मेरा मन बीच–बीच में कहता है कि यह क्या हो रहा है? कहीं परमात्मा से भूल तो नहीं हो रही? कहीं इस पर अपने को छोड़कर मैं भूल तो नहीं कर रहा हूँ?

जब मेरे मन के अनुकूल कार्य होते रहते है तब तो मैं परमात्मा के साथ रहता हूँ लेकिन जब कोई कार्य मेरे मन के प्रतिकूल होता है तभी अड़चन शुरू होती है और तब ही हमारे सामने कसौटी है। इस सद्गुरु के ज्ञान की ओर तभी सच्ची साधना होती है। हे सद्गुरु! सुख में एवं दुख में सन्तुलित रहने की शक्ति दे।

जैसे हम पर फूलों की वर्षा हो तब तो हम सभी, गुरू नानक देव जी महाराज की अमर वाणी को खुशी–खुशी कह सकते हैं –

जो तुधु भावै साईं भलीकार

तेरी मर्जी, वही मेरी मर्जी, जो तुझे भावे वही भला क्यों कि फूलों की वर्षा हो रही है। यदि हमारे किसी कृत्य से या प्रारब्ध के कारण हमारी निन्दा हो, अपमान हो एवं असफलता मिले उस थोड़े समय के लिए कुछ भी न दिखाई पड़े तब, सध पायें, अर्थात् राजी रहें, दुख में, पीड़ा में भी यदि सद्गुरु की कृपा से यह भाव बना रहे कि हे प्रभु, जो तुझे भावे मैं उसमें राजी रह सकूं, यह शक्ति तेरी कृपा के बिना सम्भव नहीं है।

इस पवित्र भावना के पीछे हे सद्गुरु! मेरा केवल सन्तोष ही न हो क्यों कि हम असहाय अवस्था में अपना सन्तोष थोप सकते हैं। दुख है, कुछ करने का उपाय भी नहीं है, तब हम कहते हैं जो मेरी मर्जी। लेकिन जो तेरी मर्जी के पीछे शिकायत है, हम कहते हैं कि चलो यही ठीक है लेकिन भीतर हम जानते हैं कि (हमारे अनुसार) होना कुछ और था। जो होना था वह नहीं हुआ। हम कुछ कर भी नहीं सकते, असहाय हैं, शक्तिहीन हैं तो ठीक है तेरी जो मर्जी। अर्थात् हरि इच्छा।

हे सद्गुरु! आप कृपा करें कि सन्तोष मेरी दयनीयता न हो, यह सत्य की अभिव्यक्ति हो तभी आपके इस दिव्य महामन्त्र – **तू ही निरंकार, मैं तेरी शरण हूँ, मुझे बख्श लो,** का अंश मेरे अन्दर आत्मसात् हो सकेगा। ◆

साक्षात्कार माता कान्ता जी (मुंबई)

जब अमृत पास है तो जहर क्यों खाऊँ?

माता कान्ता जी का जन्म 83 वर्ष पूर्व (मई 1924 में) श्री किशन चन्द कपूर और श्रीमती सुशीला देवी के घर शालीमार बाग लाहौर में हुआ था। इनके जन्म के समय लाहौर भयंकर प्लेग की गिरफ़्त में था इसलिए माता–पिता का चिन्तित होना स्वाभाविक था। बच्ची का नाम चन्द्रकान्ता देवी रखा गया। माता कान्ता के पिता जी पढ़े–लिखे संभ्रान्त व्यक्ति थे। यद्यपि उस समय महिला शिक्षा पर उतना ध्यान नहीं दिया जाता था लेकिन घर के वातावरण के अनुरूप ही आपकी माता श्रीमती सुशीला देवी जी ने 8 वीं तक शिक्षा प्राप्त की थी।

1994 से मुंबई की जोनल इंचार्ज के रूप में सेवारत माता कान्ता जी सन्त निरंकारी सत्संग भवन (दिल्ली) के गुरबचन निवास में ठहरी थीं जब **श्री हरजीत निषाद** ने उनसे बातचीत की। वे भी भावविभोर होकर बचपन से अभी तक की तमाम प्रकट–अप्रकट बातें बताती चली गईं। सन्तों–भक्तों के जीवन से सारा संसार प्रेरणा प्राप्त करता है। सम्भवत: प्रश्नों और उत्तरों की यह कड़ी गुणी पाठकों को उपयोगी प्रतीत होगी।

❐ सम्पादक

प्रश्न – मुम्बई ने आपको तथा ऋषि व्यास देव जी को बहुत प्यार दिया। लाहौर से मुम्बई कैसे आना हुआ?

उत्तर – लाहौर बहुत प्यारा शहर है, बचपन की यादें इस शहर से जुड़ी हुई हैं। विभाजन ने लाखों लोगों को बेघरबार किया। जो राजा–महाराजा जैसे जीवन जीते थे वे भी मेहनत–मजदूरी करने को विवश हुए। बँटवारे के बाद मैं ऋषि जी के साथ हरिद्वार आई और फिर मुंबई आना हुआ। मेरी माता (सुशीला देवी) जी 8वीं जमात तक पढ़ी हुई थीं। पिता (किशन चन्द कपूर) जी भी सरकारी अधिकारी (रेलवे में स्टोर मैनेजर) थे। मेरी पढ़ाई बड़े लाड–प्यार से लाहौर के मशहूर विक्टोरिया स्कूल में शुरू हुई। बाद की परेशानियों के कारण मैं छठी जमात तक ही पढ़ सकी। 6 साल की थी तब माँ का देहान्त हो गया। मुझमें जो भी गुण हैं पिता के दिये हुए हैं। पिता जी आर्य समाजी थे। सहज, सरल और ईश्वरभक्त थे। वे कहा करते थे कि बेटा, जो चीज जहाँ से उठाओ उसे वहीं रखो, इससे जीवन सहज होता है। हो सके तो सबको सुख दो, दुख किसी को भी ना दो।

प्रश्न – ऋषि व्यास देव जी का जीवन में आगमन कब हुआ?

उत्तर – मेरी शादी 1941 में पेशावर के मशहूर परिवार में राय बहादुर मूलचन्द लाम्बा के सुपुत्र श्री व्यास देव लाम्बा जी के साथ हुई। राय बहादुर और खान बहादुर उस समय बड़े सम्मान सूचक सम्बोधन हुआ करते थे। बारात पेशावर से लाहौर आई। शादी बहुत शानो–शौकत से सम्पन्न हुई।

प्रश्न – ज्ञान की प्राप्ति कब और कैसे हुई?

उत्तर – शादी के समय ऋषि जी ज्ञानवान थे। शादी को आठ दिन ही हुए थे कि मुझे भी बाबा अवतार सिंह जी महाराज ने ब्रह्मज्ञान दिया। आर्य समाजियों की बेटी थी। प्रभु के बारे में यही बताया गया था कि यह निराकार है तथा हर जगह है। 12 साल की उम्र में (सम्भवतः) मुंशी प्रेमचन्द की पुस्तक में पढ़ा था कि जो कुछ नहीं है, शून्य है, वही भगवान है। तब यह बात पहेली सी लगती थी। ज्ञान मिला तो एक मिनट में समझ में आ गया कि यही तो है जो अंग–संग है। हर जगह मौजूद है। फिर तो ऋषि जी के साथ प्रचार में जी–जान से लग गई।

प्रश्न – शहनशाह जी (युगपुरुष बाबा अवतार सिंह जी) के बारे में उनके पेशावर के समय के कुछ अनुभव बताएं?

उत्तर – शहनशाह जी पेशावर छावनी में रहकर संगत करते थे। रविवार को हमारे घर पर संगत हुआ करती थी। संगत में 8–10 लोग ही होते थे। शहनशाह–जगतमाता का उस दौरान हमें बहुत प्यार मिला, जो आज भी याद आता है।

प्रश्न – विभाजन के बाद का दौर परेशानी भरा रहा होगा?

उत्तर – विभाजन से पहले ऋषि जी ने पेशावर से लाहौर आकर क्रॉकरी की दुकान खोली। विभाजन के बाद हरिद्वार आ गए। एक धर्मशाला में छोटा सा कमरा किराए पर लिया। पेशावर में कई मकान थे। किराए आते थे। ज़िन्दगी शान से चल रही थी। सब कुछ वहीं छोड़ आए। बेटी रेखा का जन्म पेशावर में हुआ था, वह साथ थी। हरिद्वार में दूध की कमी थी। ऋषि जी रुड़की से दूध मंगाकर, घाट पर बैठकर बेचते थे। मुंबई से एक रिश्तेदार आया तो ऋषि जी को घाट पर दूध बेचते देखकर बोला, "जब रायबहादुर का बेटा दूध बेच रहा है तो हमें क्या शर्म?" जो भी धंधा मिला लोगों ने किया। वह समय बड़े संघर्ष का था।

प्रश्न – हरिद्वार से मुंबई आने का क्या कारण बना?

उत्तर – शहनशाह जी का साथ बीच–बीच में मिलता रहता था। ऋषि जी हरिद्वार छोड़कर मुंबई नहीं जाना चाहते थे। परिवार के जो लोग मुंबई में थे, वे मुंबई जाने पर जोर दे रहे थे। मैं और ऋषि जी शहनशाह जी की आज्ञा लेने दिल्ली आए। ऋषि जी की आँखें नम हो गईं। शहनशाह जी ने कहा, "दुखी मत हो, जाओ तो सही।" शहनशाह जी ने सायन की बैरकों में रहने वाले बलवंत सिंह जी का पता दिया। ऋषि जी और हम सभी मुंबई आ गए। सायन में संगत शुरु हो गई। 8–10 महापुरुषों ने ज्ञान लिया। फिर हमने मझगाँव में मकान किराए पर ले लिया। वहाँ हमारे घर संगत होती, कोल्हापुर से लाल चन्द (लालो) जी आया करते थे। ऋषि जी ने पहले क्रॉकरी की दुकान खोली फिर कोका कोला कम्पनी में नौकरी कर ली। तब 1950 में उन्हें 400 रु. प्रतिमाह मिलता था।

प्रश्न – मुम्बई में दादर और चेम्बूर भवन से जुड़ी बातें बताएं?

उत्तर – हमने मुम्बई में बहुत मकान बदले। भिण्डी बाजार में भी कुछ समय रहे। दादर में दिलबर जी के पिता काहन सिंह जी रहते थे। शहनशाह जी उसी दौरान मुझे देखने आए, तब मैं बहुत बीमार थी। उसी समय हम सबने मिलकर दादर के भवन की छत डलवाई। शहनशाह जी की आज्ञा से हम दादर भवन में आ गये। हम सब मिल–जुलकर भवन की ऊपरी मंजिलें बनाते गए।

प्रश्न – ऋषि जी की नौकरी और प्रचार साथ–साथ कब तक चलता रहा?

उत्तर – ऋषि जी का ज्यादा समय प्रचार में जाता था। शहनशाह जी ने कहा, "नौकरी छोड़ दो, मण्डल से पैसा ले लिया करो।" तब मण्डल के पास पैसा कहाँ हुआ करता था। महापुरुषों में सेवा की बहुत चाह हुआ करती थी। मैं बोली, "ऋषि जी मैं बर्तन मांजकर घर चला लूंगी लेकिन मण्डल से पैसा नहीं लूंगी।" इसी बीच लालो जी हमारे घर आये। उन्होंने कहा, "मैं कोल्हापुर से घी भेजता हूँ।" मैं चार रुपये किलो में घी बेचती रही। गुड़ और कपड़ा भी बेचकर परिवार का कार्य चलाया। ऋषि जी तो प्रचार में होते, मैं कपड़ा खरीदने जाती फिर उसे बेचती थी। जहाँ से मैं कपड़ा लाती, वह बोलता, "बहन

जी, आप शक्ल–सूरत से तो बड़े खानदान की लगती हो फिर यह कपड़ा बेचने का कार्य क्यों करती हो?" मैंने कहा, "भाई साहब! मेरे पति गुरु का कार्य करते हैं। घर चलाने के लिए मैं अपना कार्य करती हूँ।" इस बात से वह इतना प्रभावित हुए कि फिर वहाँ जाये बिना ही, मुझे घर बैठे कपड़ा मिल जाता था। ऐसे ही गुरु कृपा से प्रचार और गृहस्थी चलती गई।

प्रश्न – चैम्बूर भवन से जुड़ी बहुत सी यादें होंगी?

उत्तर – चैम्बूर भवन के बारे में मशहूर था कि यहाँ भूत रहते हैं। शहनशाह जी के हुक्म से यह भूत बंगला खरीद लिया गया। ऋषि जी टूर पर चले गए। मैं और बेटी भूत बंगले में अकेले रह गए। पहली रात को डर सा लगा। फिर ध्यान आया कि निरंकार साथ है, डर किस बात का? सुमिरण करके मैं और बेटी सो गये। सद्गुरु का आसरा..... और सुमिरण में बहुत ताकत है। आज चैम्बूर भवन एक तीर्थ स्थान बन गया है। सन्तों का आना–जाना लगा ही रहता है। शहनशाह जी चैम्बूर भवन में एक ही बार आए 3 महीने तक रुके, दोबारा फिर उनका आना नहीं हुआ।

प्रश्न – ऋषि जी प्रायः टूर पर रहते थे, पीछे आप कैसे सम्भालती थीं?

उत्तर – ऋषि जी ने महाराष्ट्र और उत्तर प्रदेश का बहुत टूर किया। पीछे मैं संगतों का कार्य देखती। हिसाब–किताब लिखती रहती। जब ऋषि जी आते रसीदें काटते। फिर ऋषि जी बीमार हो गए। पता चला कि उनको रक्तकैंसर है फिर वह दिन भी आया जब 13 जनवरी 1986 को ऋषि जी नश्वर शरीर त्यागकर इस निराकार में लीन हो गये। उनकी यादें सिहरन पैदा कर देती हैं –

जल बिन मेह, नदी बिन वारी,
तैसेहि नाथ पुरुस बिन नारी।

पानी के बिना बादल और नदी की जो दशा होती है पति के बिना स्त्री की भी वैसे ही सूनी सी ज़िन्दगी हो जाती है। बेटियाँ कनाडा में रहती थी इसलिए मैंने वहाँ की नागरिकता ले ली। आठ माह वहाँ रहती, चार माह भारत में। कुछ समय जीवन ऐसे ही चलता रहा।

प्रश्न – मुम्बई के जोनल इंचार्ज की जिम्मेदारी कब आई?

उत्तर – 1994 में जनवरी सन्त समागम के बाद सद्गुरु बाबा हरदेव सिंह जी महाराज का आदेश आया। पहले तो मुझे कुछ समझ ही नहीं आया। सत्यार्थी जी ने मुझे कहा, "आप मुम्बई के जोनल इंचार्ज की सेवा सम्भालो।" मैंने कहा, "शास्त्री जी, मैं अनपढ़ क्या करूंगी? यह आदमियों का काम है, यह मेरा काम नहीं है।"

शास्त्री जी ने कहा, "तू कौन है करने वाली? करना तो गुरु ने है।" दासी ने सिर झुका लिया। गुरु की कृपा से भक्ति और व्यवस्था निभी जा रही है। दासी आज तक कभी भी स्टेज पर नहीं बैठी। गुरु के प्यारे महात्मा सब कार्य करते आ रहे हैं। रोज 165 संगतें मुम्बई में होती हैं। संगतों में लगातार बढ़ोतरी होती जा रही है, यह कमाल सद्गुरु बाबा जी की रहमतों का है।

प्रश्न – बाबा गुरबचन सिंह जी से जुड़ी कोई यादगार बातें बताएं?

उत्तर – 1977–78 में बाबा गुरबचन सिंह जी के साथ, अमेरिका व कनाडा का टूर ऋषि जी के साथ करने का मौका मिला। उनका और राजमाता जी का प्यार भुलाए नहीं भूलता।

कल ही रात राजमाता जी के साथ बेड़े में बातें करते–करते कब आधी रात बीत गई, पता ही नहीं चला। सद्गुरु तो प्यार का समन्दर होता है।

प्रश्न – बाबा हरदेव सिंह जी महाराज के साथ बीते कई यादगार अनुभव होंगे?

उत्तर – 28 वर्ष की छोटी सी उम्र में बाबा हरदेव सिंह जी महाराज ने विपरीत हालातों में मिशन की बागडोर संभाली। 1992 में बाबा जी चैम्बूर भवन में ठहरे थे। सन्त समागम के समय की बात है। दासी सेहरा लेकर, ऊपर बाबा जी के पास जाने के लिए, सीढ़ियों में गई। सोचा यदि कुछ विपरीत संकेत करेंगे तो वापस आ जाऊंगी। 24 अप्रैल 1980 के भयावह दिन को पूरे 12 साल हो चुके थे। बाबा जी बोले, "सेहरा बांधोगी?" बाबा जी को संगत में सेहरा बांधा। पूरी संगत खुशी से झूम उठी। दासी के गीत पर 2 लाख रुपये इनाम आया, जो गुरु चरणों में भेंट कर दिया।

(शेष पृष्ठ 25 पर)

श्री गुरुवचनामृत

1 जून 2008 (रविवार) को सुजानपुर टिहरा में आयोजित हिमाचल प्रदेश के पाँचवें सन्त समागम को सम्बोधित करते हुए सद्गुरु बाबा हरदेव सिंह जी महाराज ने फरमाया –

साध संगत जी, प्रेम से कहना – धन निरंकार।

साध संगत हिमाचल प्रदेश के प्रान्तीय सन्त समागम का यह सुन्दर रूप देखने को मिल रहा है, जहाँ उत्साह व लगन के साथ सभी उपस्थित हैं।

देर रात जब यहाँ पहुँचना हुआ उस वक्त भी यहाँ अनेकों महापुरुष मौजूद थे, जो अपनी खुशी भी जाहिर कर रहे थे और सेवा में भी लगे हुए थे। आज सुबह मैदान के आस–पास के इलाके के कुछ हिस्से की सड़कों से भक्तजन गुजरते हुए आये और कुछ नाचकर, कुछ गाकर यह सत्य का पैगाम दिया। उसके एकदम बाद इसी पंडाल में सत्संग आरम्भ हो गया। अभी तक जिस–जिस ने भी अपने भाव प्रकट किये, एक–एक शब्द यथार्थ और कल्याणकारी वचन था। उसे श्रवण करके ये आनन्द भी प्राप्त करते हैं और साथ ही उन वचनों को अपनाकर जीवन का भी रूप निखारते हैं। हर किसी को ये सत्य सन्देश देते जा रहे हैं युगों–युगों से।

अभी कुछ समय पहले जब दास ने एक – दो मिनट भाव प्रकट किये, *Media* वालों की इच्छा के कारण उसमें भी दास कह रहा था कि देश–विदेश के अनेकों हिस्सों में जाने का अवसर मिलता है। इस वर्ष भी जहाँ–जहाँ जाने का मौका बना, वहाँ की अपनी–अपनी भाषाएं हैं परन्तु महापुरुषों का सन्देश सदा एक जैसा ही रहा। ऐसे ही सुन्दर नजारे हर स्थान पर देखने को मिलते हैं।

पिछले दिनों यहाँ के लिए ध्यान आया कि समागम हो पालमपुर के इलाके में, क्यों कि

हिमाचल में तीन वर्ष हो चुके थे समागम हुए।

पिछले वर्ष दूर देशों में जाना पड़ा और फिर उसके बाद सितम्बर में दोबारा दास को लंदन जाना पड़ा क्योंकि वहाँ *corporate* (कार्पोरेट) जगत की मीटिंग थी, कल पालमपुर में भी उन्हीं के द्वारा आयोजन किया गया था, *Environment* (पर्यावरण) के ऊपर। इसके कारण हिमाचल में उस वक्त समागम नहीं हो पाया लेकिन जहाँ कहीं भी जाते हैं, रूप बदल जाते हैं, संस्कृतियाँ बदल जाती हैं लेकिन यह कल्याण का मार्ग जो महापुरुषों ने युगों–युगों से बताया, इस पर जो चल पड़ता है वही मुक्ति पाता है। यह कल्याण का मार्ग हर किसी पर लागू होता है इसलिए हर किसी को, यह पैग़ाम दिया जा रहा है। एक–एक मानव को महापुरुष जागरूक करने की इच्छा रखते आये हैं। गफ़लत की नींद से सभी उठें, जागरूकता प्राप्त करें, ऐसी *Awareness*(जाग्रति) आये, जिसके कारण इन्सान का संसार में आना सफल हो। महापुरुषों के ये प्रयत्न उपकार की भावना से युक्त होकर हैं कि कोई भी इस पहलू से अछूता न रह जाये। हर कोई जहाँ अपनी आत्मा का कल्याण करे वहाँ इस लोक की यात्रा को भी प्रेमपूर्वक तय करे।

दास अक्सर कहता है कि इन्सान का जिस्म पा लेने से ही इन्सान की पहचान कायम नहीं हो जाती। यह पहचान बनती है तब, जब हम गुरु–पीर–पैगम्बरों की शिक्षाओं को धारण करते हैं। जब अपनी फ़ितरत इन्सानों वाली बनाते हैं। दूसरों को खुशी देते हैं, दूसरों का सहारा बनते हैं। गिरे हुए को उठाते हैं, रोते हुए को हँसाते हैं, जख्मों को भरते हैं। इस प्रकार के जब कर्म किए जाते हैं, इन भावनाओं के अन्तर्गत तो फिर यह पहचान बनती है इन्सान होने की, वरना इन्सान के जिस्म को पाकर भी इन्सान हैवान क्यों कहलाते हैं?पहचान तो जिस्म के रूप में इन्सान वाली है ही, इन्सान के घर ही पैदा हुआ है, किसी भालू, किसी शेर या चीते के घर नहीं। लेकिन इन्सान की पहचान नहीं बनी, क्यों कि इन्सानियत की डगर पर नहीं चला विपरीत भावनाओं के अन्तर्गत जीवन जीते चले गये इसलिए हैवान और शैतान कहलाये। हिंसक वातावरण, घुटन वाला वातावरण स्थापित करने में इन्सानों का ही योगदान है इसलिए कहा भी है कि –

करतूत पशु की मानुष जाति

करतूत पशुओं से भी बदतर और मानुष जाति में आया है। इन्सान के हाथों ही सबसे अधिक नुकसान हो रहे हैं। कल भी *Climatic Changes* (जलवायु परिवर्तन) में *Spirituality* (अध्यात्म) का *Role* (भूमिका) क्या है, इसके बारे में कुछ शब्द कहने का मौका मिला। वहाँ दास यही कह रहा था कि इस धरती पर इन्सान विचरण करते हैं। इन्सानों का ही उत्तरदायित्व है कि वह सोचें। कल एक कहावत अंग्रेजी में दास ने कही कि – *We are not yet the passengers of this spaceship of earth but we are all the crew members.* धरती को *Spaceship* उसने कहा, क्यों कि यह धरती भी तो *Space* में ही है। हम सब केवल यात्री नहीं हैं। हम इसके *crew Members* (चालक सदस्य) हैं। ऐसा नहीं है कि इस धरती के बाकी सभी सिलसिलों को ठीक रखना दूसरों का काम है, सरकारों का काम है, किन्हीं *organisations* (संगठनों) का काम है, नहीं! यह तो हर इन्सान का काम है क्यों कि अगर गन्दगी फैलाई जाती है, उसमें हम ही तो शामिल हैं। जिन घरों में रहते हैं, जिस मुहल्ले में रहते हैं, कूड़ा–कर्कट बेतहाशा हम फेंकते जाते हैं। ऐसा वातावरण बनाने में इन्सानों का ही हाथ है। हथियारों–विस्फोटकों का इस्तेमाल कौन कर रहा है? कोई कुत्ता या शेर आकर भरे बाजार में बम नहीं फेंक जाता। जैसे एक शायर ने भी साधारण सी पंक्तियों में कहा कि– पशुओं में तो दोनों अलग–अलग जाति वाले लेकिन इन्सान के लिए इन्सान यानि कि इन्सान ही इन्सान का सबसे अधिक नुकसान करने वाला। यही

पर्यावरण को नुकसान पहुँचाने का भी कारण बना है, इसलिए यह जिम्मेदारी हर किसी के ऊपर है। इन्सान ने इन्सान की तरह जीवन जीना है। महापुरुष–सन्त यह पैगाम हर इन्सान को देते चले जा रहे हैं कि इन्सान इस बात को समझे कि उसके उत्तरदायित्व हैं। उसको यह हीरे जैसा अमोलक जन्म मिला है लेकिन यह इसे कौड़ियों के भाव गँवाकर जाता है फिर कौन इसे समझदार कहे?यह नासमझी, यह पिछड़ापन, कोई आगे बढ़ना तो नहीं माना जायेगा। इसे सभी पशु–पक्षियों के मुकाबले में सोचने की अधिक क्षमता मिली फिर भी यह न समझे तो फिर पिछड़ापन ही तो कहा जायेगा। साध संगत, कहने का भाव यही है कि भक्त–महापुरुष–सन्तजन यही चाहते हैं कि इन्सान जागरूकता को प्राप्त करे और इस बात को समझे, जिस के लिए मानव जीवन मिला है। जैसे महापुरुषों–सन्तों ने कहा कि यह बात अगर समझ में आ जाये तो – फिर वो इस प्रकार जीता है कि धरती के लिए वरदान बन जाता है। पहले भी महापुरुषों ने कहा कि इन्सान तूने धर्म की परिभाषा नहीं समझी इसलिए धर्म का क्या–क्या रूप तू बनाता जा रहा है। तू अपने आपको धर्मी तो मानता है लेकिन धर्म की सार जाने बगैर। महापुरुष–सन्तजन यह भी कहते हैं कि –

गल समझ लई ताँ रोला की?
फिर राम रहीम ते मौला की?

एक बात समझ ली फिर तो बखेड़े खत्म हो गये, कोई तकरार ही नहीं है। फिर कोई हैवानियत नहीं है। फिर तो संभलना और अपने असली रूप में स्थित हो जाना। महापुरुषों के यत्न यही रहे कि यह बात दिलो–दिमाग में बैठ जाये, यह ज्ञान का उजाला स्थापित हो जाये, मन में से अन्धकार मिट जाये, उज्ज्वल रूप, इन्सान का देखने को मिले। धरती के किसी भी हिस्से में चाहे वो बसने वाला है, वो फिर वरदान ही बन जायेगा, इसलिए सन्त–महात्मा–भक्तजन यह सन्देश देते जा रहे हैं कि इन्सान तूने उसकी तरफ गौर करना है, उसको अपनाना है।

महात्मा कहते हैं कि हे इन्सानों, तुम भ्रम में पड़े रहते हो तभी कुछ का कुछ हो जाता है। बात कुछ होती है और समझ कुछ लेते हो, इस प्रकार तुम्हारी दृष्टि भी उसी के अनुसार देखती है। इशारा कुछ किया जा रहा है और तुम्हारे दिमाग में कुछ और ही बैठ रहा है। जैसे दास अक्सर मिसाल देता है कि एक महात्मा ने उंगली से इशारा किया। उसके पास खड़े उसके शिष्य उंगली की तरफ टकटकी लगाकर देखे जा रहे थे। महात्मा ने यह देखा तो कहा कि मैं किसी और चीज की तरफ इशारा कर रहा हूँ, उस तरफ देखो। इसी प्रकार कहा कुछ जाता है और समझते हम क्या हैं? हम धर्म की *Basic* (मूल) परिभाषा को कुछ और ही रूप दे देते हैं। शायर इकबाल ने जब यह कहा था कि –

मजहब नहीं सिखाता आपस में वैर रखना

तो हम शायद यह समझ बैठे कि कहा गया है कि

मजहब नहीं सिखाता आपस में प्यार करना

कहने का भाव यही है कि कहा कुछ

जाता है और समझा कुछ और जाता है। गुरु–पीर–पैगम्बरों के आदेश कुछ होते हैं, हम उन्हें स्वरूप कुछ और दे देते हैं। इस प्रकार अज्ञानता के अन्धकार में विचरण करते हैं।

एक सज्जन कहने लगे कि मैं भ्रम में पड़ा रहा। उसने पूछा कि कैसे?तो कहने लगा कि एक बहिन जी को बड़ी देर तक देखा कि कान पर हाथ लगा कर बैठे हुए, थोड़ी देर बाद देखा तो अभी भी कान पर हाथ लगा हुआ था, दस मिनट, 15 मिनट, 20 मिनट बीते। मैंने देखा कि इतनी देर से शायद इनके कान में दर्द हो रहा है। जब मैंने किसी और बहिन जी को कहा कि जाकर देखिए शायद तकलीफ में लगती हैं तो वह बहिन जी मुस्कुराकर बोली कि उनके कान में दर्द नहीं था बल्कि चुन्नी के पल्लू के अन्दर उन्होंने मोबाइल अपने कान पर लगाई हुई थी और वो बाते कर रही थीं। कहने का भाव कि समझ का फर्क है।

एक इन्सान लंगड़ाकर आ रहा था। दो खड़े हुए इन्सान कहने लगे– देखो यह लंगड़ाकर आ रहा है। इसको बचपन में पोलियो हुआ होगा। दूसरा कहता है कि नहीं कोई *Accident* (दुर्घटना) हुआ होगा। कोई कहता है नहीं इसके घुटने में कोई *Problem* (समस्या) होगी। इस तरह अनुमान लगा रहे थे। वो जब करीब आया है तो पूछने पर कहने लगा– मेरी हवाई चप्पल की *Strap* (पट्टी) टूटी हुई है। बात क्या थी और समझा क्या जा रहा है। इसी प्रकार कहने का भाव कि महापुरुषों–सन्तजनों ने धर्म का असली रूप बताया है लेकिन समझा कुछ और जा रहा है। महापुरुष कहते आ रहे हैं कि परमात्मा सर्वव्यापी हैं और हम है कि इसी परमात्मा को कहीं सात आसमानों के ऊपर मान बैठे हैं। यह अज्ञानता ही तो है इसीलिए बात फिर वहीं मुड़कर आयेगी कि अज्ञानता के कारण भ्रम हैं। पीछे भी गुजरात के जाम नगर में जाने का मौका मिला तो एकदम ध्यान में बात आई कि यह जाम नगर है। कैसे–कैसे मायने इसके मान लिये गये होंगे। कोई कहता होगा कि यहाँ शायद ट्रैफिक जाम ही रहता होगा इसलिए जाम नगर पड़ा नाम। कोई सोचता होगा कि यहाँ शायद शराब के ठेके ज्यादा होंगे, जाम पे जाम चलते होंगे, इसलिए जाम नगर नाम पड़ा। हैदराबाद का वासी अगर जामनगर शब्द सुनता होगा, तो

(तेलगू भाषा में अमरूद को जाम कहते हैं) वो यह सोचता होगा कि शायद वहाँ अमरूद की पैदावार ज्यादा होती है। इस तरह जामनगर एक शब्द है लेकिन तसव्वुर (कल्पना) में अलग–अलग बातें बैठी हुई हैं। इस प्रकार कितनी–कितनी भ्रान्तियाँ? कोई राम कहता है कोई अल्लाह, ईश्वर, गॉड, अकालपुरख आदि। अनेकों नाम हैं इस परम अस्तित्व के लेकिन सत्ता तो एक ही है। यह जागरूकता अगर मिल गई तो फिर कोई भ्रम बाकी नहीं रहा। फिर सच्चाई में स्थित हो गये।

साध संगत, कहने का भाव यही है कि यदि अज्ञानता में इन्सान विचरण करें तो अज्ञानता बनी रहती है। पीढ़ी दर पीढ़ी तक अज्ञानता चलती जाती है क्यों कि बात की समझ नहीं। जैसे वो भी कभी समय था जब यह मान्यता थी कि यह धरती चपटी है। यह बात पीढ़ियों से चली आ रही थी। लेकिन एक दिन किसी ने देखा कि एक समुद्री जहाज आ रहा है। उस जहाज का कपड़ा जो ऊँचा बांधा होता है, उसका ऊपरी हिस्सा देखा, थोड़ी देर के बाद कुछ और अधिक नज़र आया, थोड़ी देर के बाद और नज़र आया। ज्यों–ज्यों वह जहाज नजदीक आ रहा था, उसका और अधिक हिस्सा नज़र आ रहा था फिर पूरा जहाज नज़र आने लगा। इससे उसके मन में यह ध्यान आया कि यह धरती चपटी नहीं हो सकती। यह तो गोल है इसलिए पहले ऊपर का हिस्सा नज़र आया, थोड़ी देर के बाद थोड़ा और हिस्सा नज़र आया तो यह धरती गोल है। जब उसने यह कहा तो पड़ गये सारे उसके पीछे। वह जिस गली से गुजरे, सब उसका मज़ाक उड़ायें। ऐसी नौबत भी आ गई कि केवल हँसी ही नहीं उड़ा रहे बल्कि उसको धक्का भी देने लगे। उसकी पिटाई भी करने लगे। यह भी कहने वाले आ गये कि इसको जिन्दा जला दो। बाद में पता लगा कि वह आदमी ठीक था। धरती गोल ही है। इसी प्रकार अज्ञानता में इन्सान विचरण करते रहते हैं महापुरुष कहते हैं कि –

ज्ञान उजाला पा लो और सारे भ्रम मिटा डालो।

जिस दिन सच्चाई से सामना हो गया, अज्ञानता वाली मान्यताओं से निजात मिल गई। फिर आगे आवाज देने। लगे कबीर जी ने भी कहा कि मैंने जान लिया है तुम भी जान लो। बुल्लेशाह जी ने भी कहा कि मैंने जान लिया तुम भी जान लो। हर

महात्मा के सन्देश यही रहे हैं ताकि हर इन्सान इस रोशनी के अन्तर्गत ही जीवन के सफर को तय करे। जैसे कहा है कि –

एक दीप अन्दर कि मन उजियारा हो।
एक दीप बाहर कि स्वागत तुम्हारा हो।
एक दीप चौराहे पर कि सबका सहारा हो।

इसी प्रकार भक्त वही होते हैं जिनकी आत्मा भी रोशन हो, मन भी रोशन हो। आगे कहते हैं कि –

स्वागत तुम्हारा हो।

क्यों कि स्वागत में दोनों बाजु खुल गये। प्यार–स्नेह जाग गया। अपनेपन की भावना पैदा हो गई। जब ज्ञान के दीप जल जाते हैं तो मन में अपनापन पैदा हो जाता है। फिर कोई पराया नहीं, फिर सारे अपने हैं तो स्वागत तुम्हारा हो और एक दीप चौराहे पर कि सबका सहारा हो। इस प्रकार सन्त हर किसी के ऊपर उपकार करते चले जाते हैं ताकि इन्सान जागरूक हो जायें, इस सच्चाई में स्थित हो जायें। जीवन का महत्व किसके कारण है, यह हम जानें। जब यह जान लेंगे तो जीवन जीने का भी सलीका आ जायेगा। जब समझ लिया कि प्यार से ही जीना है, नफरत से जीना तो जीकर भी मृत होने के समान हैं, इसी प्रकार अगर प्यार और परोपकार की भावना से नहीं जी पाये तो साँस तो बेशक चल रही है लेकिन लाश से ज्यादा नहीं हैं। यदि सुन्दर भावनाओं से युक्त होकर नेक जीवन जी रहे हैं तो ही इन्सान होने की पहचान स्थापित कर पा रहे हैं।

महापुरुष–सन्तजन कहते हैं कि एक तरफ तो 21वीं सदी में हम पहुँच गये, दूसरी तरफ कितना हम पिछड़ते जा रहे हैं। कितनी हिंसा और नफरतें बढ़ती जा रही हैं। यह काहे की प्रगति?ऐसे हालात, जो शायर का शेअर दास अक्सर कहता आ रहा है –

सदियों की तहजीब को, भुला डाला है।
पड़ौसी ने पड़ौसी का घर जला डाला है।

इस प्रकार सदियों की तहजीब कि वो भी समय होते थे जब इस प्रकार पड़ौसी एक–दूसरे को परिवार के सदस्य मानते थे। पूरे गाँव के परिवार एक–दूसरे का अंग परस्पर मानते थे लेकिन हालात ऐसे हो गये और धर्म ने भी हमारे मनों में इतने जहर घोल दिए, कि एक–दूसरे की जान के वैरी बन गये। वो कहावत ध्यान में आती है कि वो भी समय था जब कच्चे मकान थे लेकिन घर पक्के थे। अब मकान पक्के है लेकिन घर कच्चे होते जा रहे हैं। हमारे सम्बन्धों में से भी, प्यार रूपी सूत्र टूट चुका है। पहले भी महापुरुषों ने कहा कि एक ऐसा धागा है जिस पर अगर वार करते रहें तो यह कमजोर होता–होता टूट जाता है। जैसे कहा है –

रहिमन धागा प्रेम का मत तोड़ो चटकाय,
टूटे से फिर न जुड़े जुड़े गाँठ पड़ जाय।

इस धागे को मजबूत करते जाना है। प्यार घरों में भी बस जाये। एक–एक मन में बस जाये तो फिर वाकई घर स्वर्ग बन जाये। वाकई ये भक्तजन हैं, जिनके मनों में पीड़ा होती है हर इन्सान के लिए। इतनी–इतनी कुर्बानियाँ भी दे डालते हैं। खुद आप आराम नहीं लेते। दूसरे में जागरूकता लाने के लिए ऐसे योगदान देते चले जाते हैं और जैसे कहने वालों ने कहा है कि –

अपने घरों से उजड़कर दूसरों का घर बसाते हैं,
फूल फिर भी मुस्कुराते हैं।

फूल का घर कौन सा?जिस टहनी पर लगा हुआ वही उसका घर है लेकिन उसी टहनी से टूटा हुआ फूल कितनों–कितनों को संवार रहा है। कोई उसको हार का रूप दे रहा है। कोई उसकी पंखुडियाँ रास्ते में बिछाकर स्वागत कर रहे हैं, फूलों की वर्षा कर रहे हैं। ऐसी ही सन्तों–महात्माओं की देन युगों–युगों से रही है। ये दूसरों की पीड़ा हरने के लिए, खुद अनेकों प्रकार के कष्ट भी सहते हैं लेकिन मन में दूसरों

के प्रति दर्द होता है। उसी के अन्तर्गत ये स्थान–स्थान पर जा–जाकर, यही उपकार करते हैं।

साध संगत! उसी भाव से आज यहाँ इस समागम का भी आयोजन हुआ है। सभी के योगदान हुए हैं जिसके कारण यह एक सुन्दर रूप यहाँ देखने को मिला है। हिमाचल प्रदेश के पहाड़ी इलाके में जहाँ मैदानों की तरह सफर करना सरल नहीं है। पिछली बार जब बिलासपुर में समागम हुआ था, उसके अगले दिन ही दास को कुछ दूर किसी गाँव में जाने का मौका मिला। पहले तो किश्ती में सवार होकर तो फिर जहाँ पहुँचे वहाँ जब पगडंडियों से ऊपर चढ़े और देखा कि कितनी फिसलन थी। एक दिन पहले भी बरसात हुई थी और पहले भी बरसातें चल रही थीं। कितने दुश्वार रास्ते और वहाँ से भी महापुरुष समागम पर पहुँचे थे। कहाँ–कहाँ से भक्त चलकर जाते हैं और सच्चाई का प्रचार करते हैं। ये अपने अकीदे–विश्वास परिपक्व रखते हैं। इस ध्येय को पूरा करने के लिए निरन्तर आगे बढ़ते जाते हैं। ऐसे मंजर आते भी हैं ज़िन्दगी में लेकिन जैसे शायर ने वह एक पंक्ति कही है –

मैं तुम्हारा हूँ इसीलिए अभी तक नहीं हारा हूँ,
इस प्रकार समर्पित हूँ और तुम्हारा हूँ।
तुम्हारे ही लेखे यह जीवन है इसलिए नहीं हारा हूँ।

कैसे–कैसे समय भी जीवन में आ जाते हैं, रास्ते दुश्वार भी हो जाते हैं लेकिन फिर भी भक्त चलता जाता है। इसने अपनी मंजिले–मकसूद पा ली होती है लेकिन एक और मंजिल जो यह तय कर रहा होता है कि हर जगह उजाला हो। यही इसके सामने मंजिल होती है। इसको पूरा करने के लिए यह निरन्तर आगे बढ़ता जाता है। ऐसे भी लोग हैं जो चाहते हैं कि मैं चाहे काम राई जितना करुं पर मेरा नाम पहाड़ जितना हो जबकि भक्त पहाड़ जैसे बड़े काम करके भी अपना नाम बिल्कुल नहीं चाहते। इनकी अवस्था तो वैसी होती है जैसे रहीम जी की बात कि –

देनहार कोउ और है देवत है दिन–रैन
लोग भरम मोपे करें ताते नीचे नैन।

रहीम जी कहते हैं कि देने वाला तो एक ईश्वर है। लोग मुझ पर भ्रम करते हैं कि शायद मैं देने वाला

हूँ, इसलिए शर्मिन्दगी से मेरी निगाहें जमीन की तरफ हैं।

साध संगत, कहने का भाव यही है कि भक्तों और संसार के इन्सानों की सोच और भावना में यही अन्तर होता है जैसे अंग्रेजी में कहावत है– *Victory has hundred fathers but failure is as orphen.* कामयाबी जब होती है तो उसको *Claim* (दावा) करने वाले सैकड़ों पैदा हो जाते हैं कि मैंने किया है लेकिन जब कहीं नाकामयाबी हाथ लगे तो फिर जिसने उसमें योगदान दिया भी है, वो भी पल्ला झाड़कर आगे निकल जायेगा। यह फर्क है। ये चन्द ऐसे पहलू हैं जिनका आज भी सत्संग में जिक्र कर रहे थे। चाहना मन में यह लिये हुए कि इसकी तरफ गौर किया जाये, और इस प्रकार अपनी आत्मा को इन्सान परमात्मा का बोध करवाकर आवागमन के बंधन से निजात पाये, सच्चाई में स्थित होकर जीवन की यात्रा तय करे।

इसी प्रकार हम पर्यावरण के रूप में भी देखें। जिन स्थानों पर हम रहते हैं, उनकी साफ–सफाई इत्यादि की तरफ देखें और जैसे दास ने कहा कि हम सभी का उत्तरदायित्व है कि वातावरण को सुन्दर रखें। तमाम रोगों से निजात पायें और तन्दुरुस्त जीवन जियें। शारीरिक रूप में भी और मानसिक रूप में भी। समाज भी *Healthy* (स्वस्थ) हो, जहाँ सामाजिक कुरीतियाँ न हों, अपना मुल्क ही क्या सारा संसार ही *Healthy Atmosphere* को स्थापित भी करे और विचरण भी करे, यही एक शुभकामना–प्रार्थना है।

दास और अधिक शब्दों का सहारा नहीं लेगा क्योंकि समय काफी आगे बढ़ चुका है। इस सन्त समागम के अवसर पर आप सभी बहुत उत्साह के साथ उपस्थित हुए। आपके दर्शनों के साथ–साथ स्थानीय सज्जनों के भी दर्शन करने का अवसर मिला। महापुरुषों ने बताया कि इस *Size* (आकार) का पंडाल हम वहाँ लगा रहे हैं तो एक महापुरुष ने बीच में कह दिया कि यह पंडाल इतना बड़ा, इतनी हाजिरी थोड़े ही होनी है, रास्ते में होशियारपुर का भी प्रोग्राम बन गया है और कुछ इलाके जो यहाँ आने थे वो भी शायद नहीं आयेंगे तो यह पंडाल शायद पूरा भी नहीं भर पायेगा लेकिन आप देख ही रहे हैं कि पंडाल से बाहर भी जहाँ–जहाँ नज़र जाती है वहाँ–वहाँ ही भक्तजन नज़र आ रहे हैं। इतने उत्साह के साथ आप यहाँ उपस्थित हुए हैं और आज महापुरुषों ने कहा कि यह हिमाचल का समागम अब भी एकदिवसीय ही है और वो भी पहले तो *Ultimate* साल के बाद हो जाता था लेकिन बीच–बीच में वकफे बढ़ते चले गये। कल जैसे दास ने कहा कि कल *Conference* का आयोजन था इसलिए केवल रविवार ही सम्भव हो पाया लेकिन आने वाले समय में दातार ऐसी कृपा करे कि ये और ज्यादा जल्द भी होंगे और बाकी प्रान्तीय समागमों की तरह हिमाचल प्रदेश भी एकदिवसीय समागम तक सीमित नहीं रहेगा। आप सब इन समागमों की भी शोभा बना रहे हैं और इसी उत्साह के कारण ऐसे विशाल रूप बन रहे हैं। दातार कृपा करे कि सभी का जीवन आनन्दमय बना रहे और जैसे भक्तजन गाते भी हैं और गा भी रहे हैं कि –

जीवण दा आ गया मज़ा दातेया.....

इस प्रकार जब जीने के मायने ही जान लिये, जब मंजिल ही पा ली, तो फिर जीने का मजा क्यों न आये?आप भक्तजन जो महसूसियत करते हैं वही सन्देश दे रहे हैं। दास और अधिक शब्दों का सहारा न लेता हुआ इन्हीं शब्दों में आपसे इजाजत चाहेगा।

साध संगत जी, धन निरंकार।

(संग्रहकर्ता : सुलेख 'साथी')

(पृष्ठ 18 का शेष) साक्षात्कार ...

बच्चों ने पूछा, "2 लाख इनाम आया है।" मैंने कहा, "बेटे, वह गुरू का था गुरु को भेंट कर दिया।" पूज्य माता जी व राजमाता जी को भी सेहरा बांधा। वह खुशी का अवसर मेरे जीवन की धरोहर है। अभी भी संगतों में कभी–कभार गीत बोलती हूँ। ऋषि जी का बड़ी प्यारा गीत –

आई भिखारिन झोलियाँ भर दे।

सद्गुरु तो रहमतों से झोलियाँ भरता ही है, संगतें भी माया रूप में इनाम की झड़ी लगा देती हैं। दासी ने इस माया का क्या करना? गरीब महापुरुषों की मदद में यह माया काम आती रहती है।

प्रश्न – पहले के समय में और आज के दौर में भक्ति भाव में आप क्या अन्तर पाती हैं?

उत्तर – भक्ति में सरलता और सम्पर्क बहुत जरूरी है। पहले भोले भगत बहुतायत में थे। अब चालाकी और ***Politics*** (राजनीति) वाले भी आ जाते हैं। पहले प्यार बहुत था। अब, मैं कुछ बन गया हूँ, यह भाव भी आ जाता है। संगतें तो बहुत बढ़ी हैं परन्तु ध्यान रखना होगा कि सुख और कल्याण निरिच्छित सेवा से ही सम्भव है। मुझे ध्यान आता है कि एक बार ऋषि जी के पास एक–एक करके 60 दुपट्टे इकट्ठे हो गए। ऋषि जी ने सन्तों का खाना किया। जो प्रचार में योगदान दे रहे थे उनको वे साठ दुपट्टे पहनाकर घर में सबके चरण डलवाए। प्रचार में महापुरुषों को आगे लाने का उनका अन्दाज निराला था। प्यार से दुनिया अपनी हो जाती है।

प्रश्न – विपरीत स्वभावों को ठीक करना भी तो जरूरी है, कोई उपाय बताएं?

उत्तर – सद्गुरु का दरबार शिकवे–शिकायत का नहीं है। एक बार ऋषि जी को किसी के बारे में कहा गया कि फलाँ महापुरुष माया की रसीद नहीं काटते। ऋषि जी ने शहनशाह जी को उस महात्मा के बारे में बताया। शहनशाह जी ने कहा, "मुझे आपका इस तरह से शिकायत करना अच्छा नहीं लगा। यह मेरा काम है आपका नहीं।" ऋषि जी ने प्रण किया कि आगे से ऐसा नहीं करेंगे। कहीं कमियाँ होती भी हैं तो उनको उछालने की जगह व्यक्तिगत तौर पर विनती कर दी जाती है। नहीं मानने पर सद्गुरु–निरंकार पर छोड़ देना ही उचित है। हाँ, स्वयं के बारे में सचेत रहना बहुत जरूरी है। मैं तो यही सोचती हूँ कि जब बाबा जी ने सब कुछ दिया हुआ है तब उसमें क्यों न आनन्द मानूं? जब अमृत पास है तो जहर क्यों खाऊँ? दासी अभी भी चैम्बूर भवन पर लंगर के 1500 रुपये प्रतिमाह जमा करती है। जहाँ सन्तजनों का खाना बनता है, दासी भी वहीं पर दाल–फुलके खाती है। जब बाबा जी ने दिया हुआ है तो मुफ्त लंगर खाकर ज़हर क्यों खाऊँ? सेवा करके अमृत क्यों नहीं? भक्त में सबर–सन्तोष आना जरूरी है।

प्रश्न – उम्र की शती (Century) में 17 (2007 में) साल बाकी हैं। सद्गुरु से मांगना हो तो क्या मांगेंगी?

उत्तर – इस मई में 83 साल की हो रही हूँ। इस लम्बी जीवन यात्रा में उमाकान्त जी, बालरूप जी, गोविन्द फणसे जी, पांडुरंग जी, जोशी पिता जी, चन्दबली जी, विलायत राय जी और किन–किन के नाम लूँ, सभी का प्यार और सहयोग मिला। नौजवान बच्चे बहुत हैं जो सहयोग दे रहे हैं। अनेकों बच्चे दिन–रात सहयोग कर रहे हैं। इन सभी के सहयोग व प्यार से ही गुरु का कार्य दिन–रात हो रहा है। सच्चाई का संदेश महाराष्ट्र में जन–जन तक पहुँच रहा है। अभी जनसम्पर्क प्रदर्शनी वापी में लगी, वहाँ मैंने उद्घाटन के समय यही बोला, "बाहरी सुन्दरता के पीछे दुनिया भाग रही है, सौंदर्य प्रसाधन इस्तेमाल कर रही है आन्तरिक सुन्दरता ब्रह्मज्ञान से मिलेगी, ब्रह्मज्ञान पर जीवन ढालने से मिलेगी।"

बाबा जी की अपार रहमत है कि मुझ अनपढ़ से इतना कार्य करवा ले रहे हैं। यही मांग बाबा जी के चरणों में है कि सबको सुख दे। दातार सबका कल्याण कर और इस शरीर से भी जब तक कार्य लेना है स्वस्थ रख। मैं बिस्तर पर नहीं पड़ना चाहती। जब इसे लेना हो चलते–फिरते ले लेना। आपकी वस्तु है। आपको जब कहोगे देने में देर न करूंगी। ◆

बाल वाटिका

अपनेपन का एहसास

❒ **सरिता** (केशवपुरम्, दिल्ली)

पिछले दिनों भारत ने विश्वकप जीता। जीतने के बाद शुरु हुआ खुशी का जश्न। यह जश्न देश के हर वर्ग–बच्चे, बूढ़े, जवान, अमीर–गरीब, महिला–पुरुष सभी ने मनाया। इनमें से अधिकांश लोगों ने क्रिकेट टीम के सदस्यों को कभी हू–ब–हू देखा भी नहीं होगा। बहुत से ऐसे भी होंगे जो क्रिकेट के खेल को भलीभाँति समझ भी न पाते होंगे परन्तु जब उन्हें पता चला कि अपना भारत विश्वकप जीत गया तो उन्होंने भी नाच–नाचकर अपनी खुशी जाहिर की।

मन में विचार आया कि विश्वकप मैडल, पुरस्कार, धन, यश और नाम इस देश की क्रिकेट टीम को मिला है परन्तु खुशियाँ सब मना रहे हैं। क्यों?जबकि किसी व्यक्ति विशेष को उससे लाभ नहीं हो रहा। थोड़ी ही देर में विचार आया कि यह खुशी भारत के गौरव की तो है ही परन्तु इसके साथ एक अपनेपन का एहसास भी जुड़ा है। अपने देशवासी होने का।

जब हृदय में अपनापन आ जाता है तो हृदय से खुशी निकलने लगती है।

जब अपना बच्चा कक्षा में अव्वल आता है तो कितनी खुशी होती है क्यों कि वहाँ अपनेपन का एहसास जुड़ा है। इसी तरह अपना परिवार, अपना पड़ोसी, अपना शहर, अपना राज्य और फिर अपना देश। जब अपनेपन की भावना अन्तःकरण में आ जाती है तो उस अपने से जुड़ा सुख–दुःख, खुशी व गम सब अपने हो जाते हैं।

उपर्युक्त सन्दर्भ में यही बात सामने आई कि हमें पड़ोसी, शहर, राज्य, देश और समस्त जगत के साथ अपनापन कायम करना है। यह अपनापन आयेगा प्रेम से। सारे जगत को अपना समझना है और प्रेम करना है। जहाँ प्रेम होगा, अपनेपन की भावना होगी वहाँ वैर, द्वेष, घृणा आदि शब्दों की भी जरुरत खत्म हो जायेगी।

आज बाबा जी अपने सन्तों, भक्तों को यही सही सन्देश दे रहे हैं कि सभी अपने हैं अतः सभी का भला चाहना है। वैर, द्वेष, नफरत को अगर दूर भगाना है तो अपनेपन की भावना को विस्तार देना होगा। सारे संसार को अपना समझना होगा।

आओ हम सब मिलकर प्रेम और अपनेपन की भावना को बढ़ाते चले जाएं। ❖

आवश्यक सूचना

एक बुज़ुर्ग बहिन पत्रिका विभाग में आई और कहने लगी, "मेरे पति बहुत साल पहले सन्त निरंकारी, एक नज़र, हँसती दुनिया के आजीवन सदस्य बने थे। सारे अंक अब तक हमारे पास लगातार आ रहे हैं, बड़ा अच्छा लगता है। जनवरी 2005 में मेरे पति ब्रह्मलीन हो गए थे। अब हमने बेटे के नाम पर नया मकान लिया है इसलिए हमारे निरंकारी पत्र–पत्रिकाएं नये पते पर मेरे बेटे के नाम पर भेजने की कृपा करें।"

बहन की बात सुनकर बहुत हैरानी हुई कि आजीवन सदस्यता का भाव क्या समझा गया। उनको प्यार से बताया कि आजीवन सदस्यता जीवन काल तक ही सीमित थी जो जनवरी 2005 में आपके पति के ब्रह्मलीन होने पर समाप्त हो गई। ब्रह्मलीन होते ही आपको सूचना देनी चाहिए थी परन्तु सूचना ना मिलने के कारण ये पत्रिकाएं अब तक आपको जा रही हैं। अब इसकी सदस्यता किसी भी नाम और पते पर नये सिरे से नये दरों पर लेनी होगी।

उस बहन ने बड़ी प्रसन्नता से 1800/– रु. दिये और अपने बेटे के नाम पर तीनों पत्र–पत्रिकाओं की आजीवन सदस्यता ली। बहन बैठी–बैठी सोचने लगी और कहने लगी, "मेरे मन पर बोझ है। जो जनवरी 2005 से अब तक तीन साल हमारे पास पत्रिकाएं आती रहीं उसका क्या करना होगा?" इस उपलक्ष्य में उसे बताया गया कि तीन साल का चन्दा दिया जा सकता है या फिर उतनी माया 'सेवा पत्रिका विभाग' में दी जा सकती है। उस बहन ने 500/– रु. और निकाले और 'सेवा पत्रिका विभाग' की रसीद कटवाकर मन का बोझ हलका किया।

अनेकों और भी ऐसे परिवार होंगे जहाँ बुज़ुर्गों ने निरंकारी पत्र–पत्रिकाओं की आजीवन सदस्यता ली होगी। जब उनकी जीवन यात्रा पूरी होती है तो उसकी सूचना अवश्य पत्रिका विभाग को दें और परिवार में किसी भी नाम पर नई सदस्यता ले लें।

इस सम्बन्ध में स्थानीय मुखी, प्रमुख, जोनल इंचार्ज के चरणों में विनती है कि वे भी इस ओर ध्यान दें कि जब भी कोई महात्मा ब्रह्मलीन होता है तो उस द्वारा ली गई निरंकारी पत्रिकाओं की सदस्यता की सूची पत्रिका विभाग को शीघ्रता से दी जाये और निरंकारी पत्रिकाएं उस परिवार के किसी भी नाम पर दोबारा लगवाएं।

–सी.एल. गुलाटी
प्रभारी, पत्रिका विभाग

क्या आप चाहते हैं कि

*** आपके बच्चे का अंग्रेजी भाषा का ज्ञान अच्छा हो?**
*** आपके बच्चे की अंग्रेजी भाषा पर पकड़ और मजबूत हो?**
*** आपका बच्चा अंग्रेजी भाषा में अच्छा साहित्य पढ़ने की आदत बनाये?**
*** आपका बच्चा अंग्रेजी विषय में और अच्छे अंक प्राप्त करे?**
*** आपके बच्चे को अंग्रेजी भाषा में अपने मन के भावों को प्रकट करना आता हो?**
*** आपका बच्चा जितनी सहजता से हिन्दी भाषा समझता है, उतनी ही सहजता से अंग्रेजी भी समझे तो हँसती दुनिया (अंग्रेजी) हर महीने अपने घर मंगवाईए।**
हँसती दुनिया (अंग्रेजी) हँसती दुनिया हिन्दी का अनुवाद नहीं है।

Contents of Hansti Duniya (English):

***Thought provoking stories**
***Poems and articles**
***Painting and colouring**
***Enhancing vocabulary**
***Sudoku with mental mathe**
***Cartoons**
***Inspirational thoughts and jokes**
***Knowledge from scriptures**
*** And many other educative items.**

चंदे की दरें: एक साल का चंदा = 60 रुपये
3 साल का चंदा = 150 रुपये
20 साल का चंदा = 600 रुपये।
यह 600 रुपये आप एक साल की अवधि में 100–100 रुपये की छः किश्तों में भी जमा करवा सकते हैं।

चन्दा बैंक ड्राफ्ट या मनीऑर्डर द्वारा
इस पते पर भेजें :
पत्रिका विभाग, सन्त निरंकारी मण्डल, सन्त निरंकारी कालोनी, दिल्ली–110009
बैंक ड्राफ्ट सन्त निरंकारी मण्डल, दिल्ली के नाम देय हो। साथ में अपना पूरा पता, पत्रिका का नाम व भाषा जरूर लिखें।

–सी.एल.गुलाटी
प्रभारी, पत्रिका विभाग

गीत माधुर्य

अनिल कुमार सागर (शाहजहाँपुर, उ.प्र.)

अंग–संग में राम रमा है, कण–कण में राम रमा है,
हर माया में बसता है हर रूप यही कहता है।
ये दाता तो बसा है कण–कण में,
हर इन्सां के जीवन में.....अंग–संग.....
ये मालिक जग का है, सब इसकी सन्तान।
इसकी कृपा के बिना न मिलता भगवान।
जिन भक्तों ने पाया है, इसका ही गुण गाया है।
दुनिया का ये रखवाला, हर शै में इसका उजाला।
ये दाता तो मिला है क्षण भर में.....हर इन्सां.....
ये जीवन है गाड़ी, चलना इसका काम।
कहाँ को जाना है तुम्हें कर लो ये पहचान।
पहचान मिले सत्गुरु से, भगवान मिले सत्गुरु से।
दर्शन पाके इस प्रभु के, हो जाओ तुम इस प्रभु के।
ये बंधन तो कटेंगे पल भर में.....हर इन्सां.....
यही तमन्ना है मेरी कर लो तुम स्वीकार।
नफरत–निन्दा मिट जाये, दिल में जगाओ प्यार।
है दास 'अनिल' भी इसका, हर दिल में इसका बसेरा।
इस चमन को हसीं बनायें, मुस्काये फूल खिलायें।
ये प्रीतम तो दिखाया, हम सबमें.....हर इन्सां.....

तर्ज : सूरज कब दूर किरण से.....

बाबू–ओमी (दिल्ली)

जिस घर में इन्सान की सेवा होती है,
सच मानो भगवान की सेवा होती है।
सबको है मालूम कि नर में नारायण खुद बसते हैं।
हम नर को अपनायें तो प्रभु देख–देख के हँसते हैं।
मन से जहाँ मेहमान की सेवा होती है,
सच मानो भगवान की सेवा होती है.....
ऋषियों ने ठुकराई शबरी, राम ने यह समझाया था।
भक्त के चरण धुलाकर प्रभु ने, भक्त का मान बढ़ाया था,
जब निर्बल–नादान की सेवा होती है.....
सच मानो भगवान.....
दुनिया के सारे सन्तों ने मानव सेवा सिखलाई।
मन का चैन और खुशी हकीकी, सेवा से मिलती भाई।
वक्त पे जब जलपान की सेवा होती है.....
सच मानो भगवान.....
ईश्वर की सब सन्तानों की सेवा और सम्मान करें।
'बाबू–ओमी' सबमें ईश्वर–अल्ला है यह ध्यान करें।
राम के संग रहमान की सेवा होती है.....
सच मानो भगवान.....

तर्ज : नच्चन गावन सन्ता साज़.....

अजय 'बेजोड़' (तरावड़ी, हरियाणा)

चैन हो, सुकून हो, करार हो,
हे प्रभु, सभी के दिल में प्यार हो,
नफ़रतों की न कोई दीवार हो,
हे प्रभु सभी के दिल में प्यार हो।
अमन की ही अभिलाषा हो, मीठी–मीठी भाषा हो,
इन्सानों के खून से, अब न खेल–तमाशा हो–2
वैर न हो और न तकरार हो....हे प्रभु.....
घट–घट देखें ईश्वरी को, प्रेम–दया के सागर को,
भक्ति के अमृत रस से, भर लें मन की गागर को–2
हृदय से मानव का सत्कार हो.....हे प्रभु.....
जीवन भी मुस्काएगा, रोम–रोम हर्षाएगा,
बच्चों से गर प्रेम करें, पिता भी खुश हो जाएगा–2
सबसे अपना मधुर–मधुर व्यवहार हो....हे प्रभु....
प्यार का सागर लहराए, वैर की आंधी थम जाए,
प्रेम की हरियाली से, स्वर्ग ये धरती बन जाए–2
मानवता का ये सुन्दर परिवार हो.....हे प्रभु.....
प्रेम की ऊँची शान है, प्रेम ही तो भगवान है,
प्रेम से जग उपवन है, वरना इक श्मशान है–2
प्रेम से 'बेजोड़' कुल संसार हो.....हे प्रभु.....

तर्ज : आईए बहार को हम बाँट लें.....

प्रत्येक इन्सान रोके प्रदूषण, सरकारें भी करें विशेष प्रयास

10वें विश्व पर्यावरण कन्वेंशन में निरंकारी बाबा जी का आह्वान

❐ हमारे संवाददाता सर्वश्री विवेक रफ़ीक तथा हरजीत निषाद के सौजन्य से प्राप्त

पालमपुर (हि.प्र.), 31 मई। निरंकारी बाबा हरदेव सिंह जी महाराज ने एस.एम.कन्वेंशन सेन्टर पालमपुर में आयोजित 10वें विश्व पर्यावरण कन्वेंशन के अवसर पर कहा कि पर्यावरण की समस्या गम्भीर होती जा रही है। बढ़ते प्रदूषण और ग्लोबल वार्मिंग से निबटने के लिए हर इन्सान का जागरूक होना आवश्यक है। प्रदूषण के कारण ओजोन परत का लगातार पतली होते जाना विश्व के लिए खतरनाक होता जा रहा है। सद्गुरु देव ने आह्वान किया कि हर इन्सान प्रदूषण रोके और विश्व की सरकारें भी इस दिशा में विशेष प्रयास करें।

इसी दौरान सद्गुरु बाबा जी ने विश्व मानव श्रृंखला का भी उद्घाटन किया, जो पालमपुर–बैजनाथ मार्ग पर बनाई गई। मानव श्रृंचाला में विश्व भर से पधारे गण्यमान्य सदस्यों के अलावा हजारों श्रद्धालुओं ने हाथ में हाथ लेकर पर्यावरण संरक्षण का संकल्प लिया। सद्गुरु बाबा जी ने डॉ. माधव मेहरा एवं स्वीडन के पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. ओला उल्स्टेन को पर्यावरण के क्षेत्र में दिये जा रहे योगदान के लिए शुभकामनाएं भी दीं। सम्मेलन में विश्व भर से आये पर्यावरणविदों ने उपयोगी विचार–विमर्श किया। हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री प्रेम कुमार धूमल एवं राज्य सरकार के अनेकों मंत्रीगण भी सम्मेलन में पहुँचे तथा उपयोगी विचार रखे। शिक्षाविद् व प्रशासकों ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

पर्यावरण सम्मेलन में पहली बार पधारे सद्गुरु बाबा जी ने अपने आशीर्वचनों में बोल से अधिक कर्म पर ध्यान देते हुए मानवता के हितार्थ कार्य करने की प्रेरणा दी।

झलकियाँ

○ निरंकारी बाबा हरदेव सिंह जी महाराज का विश्व जनसमुदाय के नाम सन्देश 'ग्लोबल कन्वेंशन सोविनियर' में सचित्र प्रकाशित किया गया, जिसमें कन्वेंशन में शामिल पर्यावरणविदों व प्रशासकों को पावन आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन प्रदान किया गया।

○ सद्गुरु बाबा जी ने डॉ. सुदर्शन मैनी चेयरमैन मैनी ग्रुप बेंगलूर द्वारा विश्व बाजार में उतारी गई 'रेवा' कार का भी उद्घाटन किया। यह कार विश्व बाजार में प्रदूषणमुक्त कार के रूप में उपलब्ध होगी। यह बैटरीचालित है और 80 किमी. प्रतिदिन बिना चार्ज किए चल सकती हैं।

○ 'कन्वेंशन ऑन क्लाइमेट चेंज' के महत्वपूर्ण सत्र में महिलाओं, बच्चों एवं मीडिया में पर्यावरण चेतना विषय पर अपने महत्वपूर्ण भाव रखते हुए मिशन के जनसम्पर्क विभाग प्रभारी मेजर जे.डी. शर्मा ने कहा कि बच्चों में ग्रहण करने की क्षमता का लाभ उठाते हुए उन्हें पर्यावरण रक्षा की मूल बातें बताई जानी चाहिए। महिलाएं जो अपनी रचनात्मकता के कारण कुदरत के बहुत करीब होती हैं को जागरूक करके पर्यावरण संरक्षण की दिशा में प्रगति सम्भव है। उन्होंने कहा कि गाय घास खाती है उसके अन्दर लगा 'कनवर्टर' उसे दूध बना देता है। साँप दूध पीता है और उसे विष बना देता है। पेड़ जहरीली गैस पीकर प्राण देने वाली ऑक्सीजन बना देते हैं। इसी तरह सद्गुरु भी संसार की घृणा, हिंसा, वैर–विरोध रूपी जहर लेकर प्रीत, नम्रता, सद्भाव रूपी अमृत प्रदान करते हैं। अगर इन्सान का भाव शुद्ध हो जाये तो पर्यावरण को भी शुद्ध करने में सफलता पाई जा सकती है।

○ सद्गुरु बाबा जी ने इस अवसर पर अनेकों प्रतिष्ठित संस्थाओं को उत्कृष्टता हेतु "गोल्डन पीकॉक (स्वर्ण मयूर) अवार्ड" प्रदान किया। कार्पोरेट प्रमुखों एवं वरिष्ठ प्रबन्धकों में सद्गुरु बाबा जी की पावन उपस्थिति व उनके कर कमलों से पुरस्कार प्राप्त करते हुए उत्सुकता व प्रसन्नता दिखाई दी। सद्गुरु बाबा जी के साथ स्वीडन के पूर्व प्रधान मंत्री डॉ. ओला उल्स्टेन तथा डॉ. माधव मेहरा भी मौजूद रहे। सद्गुरु बाबा जी के कर–कमलों से पुरस्कारों को प्राप्त करने वालों में प्रमुख संस्थाएं थीं – ओ.एन.जी.सी, सुजलान एनर्जी लिमिटेड, भिलाई स्टील प्लांट भिलाई, जी.ई.इंडिया, रिलायंस इन्डस्ट्रीज

हजीरा, श्री सीमेंट, एसीसी सीमेंट मुंबई, इंडियन ऑयल कार्पोरेशन, टाटा इंडिया लिमिटेड, हिन्दुस्तान जिंक विशाखापट्टनम, एस्सार स्टील हजीरा, एल.जी. इलेक्ट्रॉनिक्स, आई. टी.सी, गैल इंडिया लि., एच.जी.सी.एल., रेल कोच फैक्टरी, एन टी पी सी, बोकारो स्टील, रेल व्हील फैक्ट्री बंगलौर, टाइटन, एल एण्ड टी, जिन्दल स्टील, अशोक लीलैन्ड आदि।

○ कन्वेंशन को सम्बोधित करने वालों में सद्गुरु बाबा जी के अलावा हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री प्रेम कुमार धूमल, स्वीडन के पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. ओला उल्स्टेन, वर्ल्ड इनवायरनमेंट फाउंडेशन के अध्यक्ष डॉ. माधव मेहरा, उपाध्यक्ष लेफ्टीनेट जनरल जे.एस. आहलुवालिया, यू.के. के सांसद बरानेस फ्लेदर, मियामी विश्वविद्यालय के प्रोफेसर जॉन डी. डैनियल, कैडबरी के पूर्व अध्यक्ष मैथ्यू कैडबरी, सान–फ्रांसिस्को के मेयर सी.ओ.रटेगा, योजना आयोग सदस्य डॉ. बी.एल.चोपड़ा, जी. ई.के एम.डी. डॉ. गुलरमो विल्मो आदि शामिल थे।

पर्यावरण सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए निरंकारी बाबा जी ने कहा कि पर्यावरण की रक्षा हर व्यक्ति को करनी होगी और सभी राष्ट्रों को इस कार्य में आगे आना होगा। मानवता की रखा हेतु सबका सांझा प्रयास आवश्यक है। सद्गुरु बाबा जी ने कहा कि डॉ. माधव मेहरा व आप सभी इस प्रयास में लगे हैं, दातार इस कार्य में आप सभी को सफलता दे। डॉ. माधव मेहरा से अक्टूबर 2006 में मिशन द्वारा आयोजित सेमीनार में मुलाकात का जिक्र करते हुए सद्गुरु बाबा जी ने कहा कि मिशन अनेकों सेमीनारों का आयोजन कर रहा है। आध्यात्मिकता को अपनाकर इन्सान में *Universalism* (सार्वभौमिकता) और *Peaceful Co-*

existence (शान्तिपूर्ण सह–अस्तित्व) की भावना आती है, जो मानवता और पर्यावरण की रक्षा का आधार बनती है।

○ गुरुदेव हरदेव ने कहा कि दास कुछ दिनों पहले जब अपनी नन्हीं दोहती (समप्रीति सुपुत्री/बहन समता व संदीप खिंडा जी) को देख रहा था तब यही भाव आया कि हम आने वाली पीढ़ी को कैसा संसार देकर जायेंगे? एक सुन्दर संसार या मुश्किलों से भरा संसार?

○ ग्लोबल कन्वेंशन में मिशन के महासचिव श्री गोबिन्द सिंह, प्रकाशन, प्रेस व इन्टरनेट प्रभारी श्री कृपा सागर, शिक्षा–प्रकाशन, बिक्री व भण्डारण प्रभारी श्रीमती राज वासदेव सिंह, मेजर जे.डी.शर्मा–प्रभारी जनसम्पर्क, श्री सन्दीप खिंडा, श्री वासदेव सिंह–उपमुख्य शिक्षक स. नि.सेवादल (दिल्ली) सहित अनेकों सज्जन शामिल हुए।

○ पालमपुर कन्वेंशन में सद्गुरु बाबा जी के आगमन से वातावरण अत्यन्त उत्साहपूर्ण व उल्लासमय हो गया। हिमाचल प्रदेश के सूचना व जनसम्पर्क विभाग के कलाकारों द्वारा बाबा जी के सम्मान में लिखी गई मार्मिक रचना विशेष रूप से प्रस्तुत की गई।

○ रंगारंग गीत–संगीत संध्या में स्थानीय विद्यालयों के बच्चों ने शानदार व चित्ताकर्षक संगीतमय प्रस्तुति देकर सबका मन मोह लिया।

○ सद्गुरु बाबा जी द्वारा विश्व मानव श्रृंखला का उद्घाटन विशेष आकर्षण का केन्द्र रहा। हजारों लोग पालमपुर–बैजनाथ मुख्य मार्ग पर लम्बी कतारों में हाथ में हाथ मिलाकर गुरुदेव हरदेव जी की उपस्थिति में संकल्प व्यक्त करते दिखे। यहाँ बाबा जी दूसरी मंजिल पर बनाए गये मंच पर डॉ. ओला उल्स्टेन व डॉ. माधव मेहरा के साथ मंचालीन थे।

○ पालमपुर में उत्तर रेलवे के रेस्ट हाउस में बाबा जी का रेलवे अधिकारियों व स्थानीय महापुरुषों ने भव्य स्वागत किया।

○ बाबा जी का यहाँ दो घंटे रुकना यादगार बन गया क्यों कि हजारों श्रद्धालुओं ने 'सद्गुरु दर्शन' की पावनता से अपने हृदयों को आप्लावित किया।

○ सायंकाल मराण्डा, पालमपुर भवन में भी बाबा जी के दर्शनार्थ हजारों महापुरुष एकत्रित थे। बाबा जी यहाँ से सीधे सुजानपुर टिहरा रवाना हो गये, जहाँ अगले दिन हिमाचल प्रदेश का प्रान्तीय सन्त समागम होना था।

सूचना समाचार

सद्गुरु बाबा हरदेव सिंह जी की मानव कल्याण यात्रा

□ विवेक 'रफ़ीक' द्वारा

सद्गुरु बाबा हरदेव सिंह जी महाराज, अपने कुछ अनुयाईयों–सहयोगियों के साथ विगत 29 मई 2008 को प्रातः लगभग साढ़े आठ बजे दिल्ली से रवाना हुए। मार्ग में सबसे पहले, पटियाला से लगभग 20 कि.मी. दूर कंसुआ खुर्द नामक गाँव में लगभग दोपहर पौने एक बजे पहुँचे। यहाँ उन्होंने गाँव में सत्संग भवन हेतु ली गयी जमीन का निरीक्षण किया।

तत्पश्चात ब्रह्मलीन कवि दरबारा सिंह जी के घर एकत्रित लगभग 150–200 श्रद्धालुओं को सम्बोधित करते हुए सद्गुरु बाबा जी ने फरमाया कि भक्त सदा सादगीयुक्त जीवन जीते हुए भी भक्ति का आनन्द प्राप्त करते हैं। निरंकार–प्रभु पर अडोल विश्वास द्वारा सेवा, सुमिरण, सत्संग व प्रभु का निरन्तर एहसास करते हुए जहाँ स्वय आनन्द प्राप्त करते हैं, वही अन्य अनेकों को भी इस ओर प्रेरित करते हैं।

मार्ग में एक–दो अन्य स्थानों पर भी पूज्य बाबा जी ने श्रद्धालुओं को दर्शन लाभ प्रदान किया, तत्पश्चात लगभग दो बजे आप नाभा पधारे। यहाँ बाल सेवादल के सदस्यों ने भांगड़ा आदि नृत्यों से अपने हर्षोल्लास की अभिव्यक्ति की व श्री निरंजन सिंह जी (I.A.S), श्री अमरजीत सिंह जी (जोनल इंचार्ज) व बहन जोगी जी (प्रभारी प्रचार विभाग), डॉ. इकबालजीतराय(कार्यकारी प्रधान, कार्यकारिणी समिति, सनिमं, यू.एस.ए.) आदि ने बाबा जी का फूलनालाओं से स्वागत किया। सत्संग भवन में उपस्थित हजारों की संख्या में साध संगत के सदस्यों के गगनभेदी जयकारों से वातावरण में जोश व उल्लास भर उठा। भक्तवत्सल सद्गुरु ने अपनी मनमोहिनी मुस्कान से हाथ हिलाते हुए श्रद्धालुओं का प्रेमाभिवादन स्वीकार किया।

नाभा सत्संग भवन से शाम 6 बजे समागम स्थल की ओर जाते हुए हुजूर ने धुई गाँव समेत 2–3 स्थानों पर श्रद्धालुओं को दर्शनों द्वारा कृतार्थ किया।

नाभा की अनाज मंडी में एकत्रित हजारों श्रद्धालुओं को सम्बोधित करते हुए सद्गुरु बाबा हरदेव सिंह जी महाराज ने कहा कि – **आज दिलों से प्यार समाप्त होता जा रहा है, एक ही देश के वासी होते हुए भी भाषा, संस्कृति एवं जात–पाँत के आधार पर एक–दूसरे से लड़–झगड़ कर देश भक्तों की कुर्बानियों को खत्म कर रहे हैं एवं देश में आज ऐसे हालात पैदा हो रहे हैं कि ऐसे लगता है कि हमें एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने के लिए भी कहीं वीजा लगवाने की जरूरत ना पड़ जाये। आज हृदय में प्यार बसाकर जीवन की यात्रा तय करने की जरूरत है। हमें सभी से निःस्वार्थ भाव से प्यार करना है, क्यों कि स्वार्थ की बुनियाद पर टिका प्यार सच्चा प्यार नहीं होता।**

आपने कहा कि महापुरुषों के हृदयों में सबका भला छिपा होता है तथा जिनके हृदयों में प्यार नहीं है, वे लोग इस धरती पर चलती–फिरती लाशों के समान हैं।

यहाँ श्री निरंजन सिंह जी (**I.A.S**), संदीप खिंडा (गुड़गाँव), डॉ. इकबालजीत राय तथा ए.एस.बैस (अमेरिका) आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

अगला कार्यक्रम होशियारपुर में आयोजित किया गया था अतः बाबा जी ने 30 मई को यहाँ पदार्पण किया।

मिलिट्री ग्राउण्ड में आयोजित विशाल

सत्संग समारोह को सम्बोधित करते हुए सद्गुरु बाबा जी ने कहा कि परमात्मा के बारे में केवल पढ़ लेना ही पर्याप्त नहीं है। जिस प्रकार पानी के पीने से ही प्यास बुझती है इसी प्रकार परमात्मा की प्राप्ति से ही भक्ति प्रारम्भ होती है।

बाबा जी ने कहा कि चर्मदृष्टि से परमात्मा के दर्शन सम्भव नहीं हैं। सद्गुरु की कृपा द्वारा जब ज्ञानदृष्टि मिलती है तो परम पिता परमात्मा की अनुभूति होती है।

बाबा जी ने कहा कि एक मछली से उसकी सन्तान मछली ने पूछा कि हम ज़मीं पर क्यों नहीं रहते? मछली ने कहा – *We are fish, we live in water. Land is for selfish.* (हम मछली हैं, हम पानी में रहते हैं, जमीन तो खुदगर्ज लोगों के लिए है।)

श्रद्धालुओं के मनों में समागम का उत्साह इतना था कि शहर की लगभग सभी सड़कों से जनसमूह भारी तादाद में समागम स्थल तक पहुँच रहा था। शहर की नामी–गिरामी हस्तियों के साथ–साथ श्री तीक्ष्ण सूद (वन मंत्री, पंजाब) ने भी समागम स्थल पर पहुँचकर हुजूर बाबा जी का आशीर्वाद प्राप्त किया। देर रात समागम सम्पन्न होने के बाद सद्गुरु बाबा जी ने सत्संग भवन की ओर जाते हुए राह में जे.सी.टी. स्टाफ कालोनी में कम्पनी के अधिकारियों एवं कर्मियों को आशीर्वाद प्रदान किया।

31 मई को स्थानीय सन्त निरंकारी सत्संग भवन में भी बाबा जी ने संगतों को सम्बोधित किया। भक्तजनों को सचेत करते हुए पूज्य बाबा जी ने कहा कि जितनी देर प्रभु पर मूले होते हैं, उतनी ही देर मन में विपरीत भावनाएं उभरती हैं इसलिए प्रभु को सदैव याद रखना चाहिए।

आपने निरन्तर सेवा, सुमिरण, सत्संग करने की प्रेरणा दी।

आज सायंकाल बाबा जी ने हिमाचल प्रदेश के सुरम्य प्राकृतिक स्थल पालमपुर में जलवायु परिवर्तन पर आयोजित एक अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार में सारगर्भित प्रवचन रखे (इसी अंक के पृष्ठ 29 से 32 पर रिपोर्ट उपलब्ध है।)

1 जून को हिमाचल प्रदेश के पाँचवें प्रादेशिक सन्त समागम में मानव मात्र को सत्य संदेश प्रदान किया। (रिपोर्ट इसी अंक में अन्यत्र पढ़ें)

3 जून को पश्चिमी उत्तर प्रदेश के सहारनपुर जिले के नकुड़ कस्बे में एकत्रित हजारों धर्मप्रेमियों को सम्बोधित करते हुए सद्गुरु बाबा जी ने कहा कि जितनी देर तक इस शरीर में साँस चल रहे हैं, तभी तक इन्सान परमपिता परमात्मा की प्राप्ति करके मोक्ष का अधिकारी बन सकता है। साँस निकल जाने पर यह सम्भावना समाप्त हो जाती है। सच्चाई यह है कि एक परमात्मा को जानकर ही भक्ति की जा सकती है। एक प्रभु को जानकर और जुड़े रहकर जहाँ इन्सान जीते जी भक्ति का आनन्द प्राप्त करता है, वहीं मुक्ति का भी पात्र बनता है।

यहाँ नगर पालिका के अध्यक्ष श्री खालिद खान ने सद्गुरु बाबा जी का नगर की ओर से अभिनन्दन किया।

4 जून को मन्दिरों व धर्माचार्यों की नगरी ऋषिकेश के एक विशाल मैदान में एकत्रित हजारों धर्मप्रेमियों को धर्म का मर्म समझाते हुए कहा कि – भक्तों के हृदयों में सबके लिए शुभ भाव होते हैं। वे परमात्मा को जानकर सबके लिए भले की कामना करते हैं। आज इन्सान का मन अपने ऊपर केन्द्रित है। सगर ऋषियों ने संसार को एक परिवार माना है। जैसे किसी छोटे स्थान पर पानी इकट्ठा हो जाए तो गन्दगी नज़र आती है जबकि सागर सब गन्दगी को समेटे रहता है। इसी तरह संकीर्ण मन में, दिमाग में, नफ़रत और स्वार्थ के कीटाणु इकट्ठे हो जाते हैं लेकिन सन्तों के विशाल हृदय, कुल संसार के लिए भला मांगते हैं। सन्त तो मानते हैं – "नेकी कर कुएं में

डाल' और संसार में लोगों का कर्म है, 'नेकी करने वाले को लुए ने डाल'। घोर कलयुग मे ऐसी भावनाए घर कर चुकी है। यू.के., यू.एस.ए. आदि देशों में जाकर पता चलता है कि *crime ratio* कितनी ज़्यादा है, बेशक हम उन्हें सम्पन्न और विकसित देश मानते हैं। सत्संग केवल कान्रस के लिए नहीं है, यह जीवन के लक्ष्य को प्राप्त करके जीवन जीने का सही ढंग जानने के लिए है। जो अपना वर्तमान सवार लेते हैं, वही मुबारिक होते हैं। नादानियाँ करने वाले करते रहे हैं, चहले भी, अब भी।

समागम में शहर के गण्यमान्य नागरिकों में से श्री ओमगोपाल रावत (विधायक, नरेन्द्र नगर), श्री दीप शर्मा (चेयरमैन, नगरपालिका– ऋषिकेश) एवं नगर की अनेक व्यापारिक संस्थाओं के अध्यक्ष एवं अन्य पदाधिकारी उपस्थित थे।

समागम के उपरान्त हुजूर बाबा जी भक्तों के काफिले सहित रात को नरेन्द्र नगर पहुँचे। 5 जून को प्रातः नरेन्द्र नगर सत्संग भवन पर जहाँ सद्गुरुदेव ने उपस्थित भक्तजनों को आशीर्वाद प्रदान किये, वहीं पीड़ितों को प्रेत बाधा से मुक्त भी किया। विदित हो कि पहाड़ी क्षेत्रों में जहाँ अन्धविश्वास व कर्मकांडों का बहुत प्रभाव है वहीं सैकड़ों देवी–देवताओं के प्रति प्रचलित मान्यताएं भी हैं।

नरेन्द्र नगर महाराजा थापा के किले व कई देवी–देवताओं के मन्दिरों के लिए प्रसिद्ध है। दोपहर नरेन्द्र नगर से रूहानी काफ़िला अगले सफर के लिए रवाना हुआ।

नरेन्द्र नगर से टिहरी गढ़वाल जाते हुए, तिम्ली से गुजरते हुए राह में शिवपुरी का पड़ाव आया। वहाँ स्थानीय धर्मोपदेशक सन्त बाबा सुद्ध सिंह जी, तीर्थ यात्रियों के लिए लंगर सेवा–शुश्रुषा में सेवादारों सहित तत्पर हैं। उन्होंने उस स्थान पर हुजूर बाबा जी का दुपट्टा पहनाकर स्वागत किया व बाबा जी को आदरपूर्वक आसन पर बैठाया। वहाँ सत्संग में मौजूद धर्मावलंबियों को संबोधित करते हुए गुरुदेव ने कहा कि परमार्थी सदा सेवा, सुमिरण, सत्संग को महत्ता देते हैं और प्रभु का शुक्रिया अदा करते हैं कि तू ऐसी सेवा के मौके प्रदान कर रहा है।

शिवपुरी से गुरुदेव श्री नगर पहुँचे तथा स्थानीय सन्त निरंकारी सत्संग भवन का उद्घाटन किया इस सत्संग में एक सादगीयुक्त विवाह भी सम्पन्न हुआ। यहाँ से सद्गुरु बाबा जी पौड़ी गढ़वाल पहुँचे। यहाँ आपका आगमन 8 वर्ष बाद हुआ था

6 जून को कंडोलिया मैदान में आपने हजारों धर्मप्रेमियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि जिस प्रकार अपनी भूख मिटाने के लिए भोजन भी स्वयं ही करना पड़ता है इसी प्रकार आत्मा को आवागमन से मुक्ति दिलाने के लिए ब्रह्मज्ञान हर किसी को स्वयं ही प्राप्त करना होगा। बाबा जी ने विवेकी जीवन जीने का संदेश दिया। यहाँ से बाबा जी गौचर की ओर रवाना हुए। मार्ग में पौड़ी–गढ़वाल के सत्संग की भूमि का भी निरीक्षण किया।

7 जून को दो बजे गौचर के पॉलिटेक्निक ग्राउण्ड में एकत्रित हजारों श्रद्धालुओं को सम्बोधित करते हुए सद्गुरु बाबा जी ने कहा कि आज भी मिसाल दी जाती है कि सिकन्दर लोभवश पूरी दुनिया में लूट–खसोट करता रहा परन्तु यह सिर्फ उसी की बात नहीं है। ऐसा कौन है जो लोभ के वश में नहीं होता। बाबा जी ने कहा कि *Need can be filled but greed can't be* (आवश्यकता की पूर्ति तो हो सकती है परन्तु लोभ की नहीं) लोभ तो ऐसा बर्तन है, जिसमें शाश्वत छेद है, जो कभी भरता ही नहीं। आपने शाश्वत सत्ता से जुड़ने का आह्वान किया।

यहाँ से जखोली जाते हुए मार्ग में सुमाड़ी में भी बाबा जी ने आशीर्वाद प्रदान किया। तत्पश्चात जाखोल मरोड़ा व मयाली में भक्तजनों को आशीर्वाद प्रदान करते हुए बाबा

जो जखोली पहुँचे।

8 जून को दोपहर स्थानीय विकास खंड मुख्यालय मैदान में एकत्रित जनसमूह को सत्य सन्देश देते हुए सद्गुरु बाबा जी ने कहा कि जिस प्रकार चिकित्सक की योग्यता रोग ठीक करना है तथा रोगी का कार्य रोग से राहत प्राप्त करना है। न चिकित्सक रोगी की जाति पूछता है और न रोगी चिकित्सक की। इसी प्रकार गुरु और शिष्यों के सम्बन्ध में भी जाति का दखल नहीं होता। बाबा जी ने कहा कि संकीर्णताओं से ऊपर उठकर भक्ति का आनन्द प्राप्त करें।

यहाँ से चम्बा की ओर बढ़ते हुए बाबा जी ने गोत्री, चिरबटिया व घंसाली में भी आशीर्वाद प्रदान किये।

यहाँ से बाबा जी रजाखेत पहुँचे। यहाँ स्थानीय विधायक श्री विजय सिंह पंवार ने आपका अभिनन्दन किया। 9 जून को यहाँ सत्संग भवन की भूमि पर एकत्रित धर्मप्रेमियों को सम्बोधित करते हुए बाबा जी ने कहा कि जैसे सिर्फ नक्शे का प्रयोग करके धूप–बरसात आदि से नहीं बच सकते इसी प्रकार केवल धर्मग्रन्थों के पढ़ने से भक्ति नहीं होती, सत्य का बोध भी करना पड़ता है। यहाँ उत्तराखंड के पूर्व मंत्री श्री विक्रम सिंह नेगी ने बाबा जी का अभिनन्दन किया।

यहाँ से गुरुदेव चम्बा की ओर रवाना हुए। मार्ग में उठड़पिपोला नामक स्थान पर भी गुरुदेव ने दर्शन लाभ प्रदान किया।

10 जून को दोपहर चम्बा के राजकीय इंटर कॉलेज के प्रांगण में एकत्रित विशाल जनसमूह को सम्बोधित करते हुए पूज्य बाबा जी ने कहा कि कुछ भी बनो मुबारिक है, पर पहले बस इन्सान बनो। इन्सानियत अपनाओ। समाज में शोषण कम नहीं हो रहा। पहले तो पहनते हैं कि दो कपड़ों में ही बेटी को भेज दो फिर पहले दिन से ही दहेज की मांग शुरु हो जाती है।

छोटे–छोटे बच्चे जब आकर अपने पिता की करतूत बताते हैं तो यह सोचने को मजबूर हो जाते हैं कि बड़ा कौन है? पिता या बच्चा? जिसमें विवेक है, सूझ–बूझ है, वही बड़ा है।

कार्यक्रम में स्थानीय पालिका अधिकारियों, नेताओं सहित अनेकों विशिष्ट व्यक्तियों ने भाग लिया।

चम्बा से देर रात्रि बाबा जी मसूरी पहुँचे। 11 जून को शाम साढ़े सात बजे, स्थानीय साध संगत को बाबा जी ने सम्बोधित करते हुए कहा कि भक्त सदा सत्य को ही विशेषता देते हैं। वे सारे सांसारिक फर्ज निभाते हुए भी भक्ति करते हैं।

यहाँ से 12 जून 2008 को प्रातः 9 बजे बाबा जी यमुना नगर (हरियाणा) की ओर रवाना हो गये। यमुना नगर में माता अमृत कौर जी के अन्तिम संस्कार में भाग लेकर सभी निकट सम्बन्धियों, परिजनों व सन्तों को सांत्वना प्रदान की।

यहाँ से 14 जून को बाबा जी दिल्ली लौट आये।

प्रशंसनीय योगदान

● कोसी कलां (उ.प्र.) निवासी, सुपरिचित रचनाकार श्री मूलचन्द कर्दम ने 'सन्त निरंकारी, 'एक नज़र' व हँसती दुनिया के 111 नये सदस्य बनाये। इनमें श्री कर्दम ने आर्थिक योगदान भी दिया जिससे कम आय वर्ग वाले पाठक भी सन्त निरंकारी मिशन के सन्देश से परिचित–लाभान्वित हो सकें।

इस अभियान में पत्रकार श्री किशोर कुमार 'स्वर्ण' ने भी प्रशंसनीय सहयोग दिया।

● पत्रिका विभाग को, देश–विदेश में बसे महात्मा प्रशंसनीय आर्थिक योगदान दे रहे हैं। इंग्लैण्ड निवासी कवि सतपाल भंडारी जी तथा श्री सुशील कुमार गढोक जी ऐसे ही सज्जनों में शामिल हैं।

हिमाचल के पाँचवें राज्य स्तरीय सन्त समागम में निरंकारी बाबा जी का उद्‌बोधन

मनुष्य जिस्म के साथ-साथ कर्म से भी मनुष्य बने

निरंकारी बाबा जी

□ हमारे संवाददाता द्वारा

सुजानपुर टिहर, 1 जून। हिमाचल प्रदेश का राज्यस्तरीय सन्त समागम आज यहाँ के विशाल मैदान में आयोजित किया गया। सन्त समागम में हिमाचल के विभिन्न स्थानों से आये हजारों श्रद्धालुओं ने भाग लिया।

सद्‌गुरु बाबा हरदेव सिंह जी, पालमपुर में आयोजित 'ग्लोबल कन्वेंशन ऑन क्लाइमेट चेंज' (जलवायु परिवर्तन पर आयोजित विश्व सम्मेलन) को सम्बोधित करने के बाद यहाँ पहुँचे थे।

हिमाचल प्रदेश की संगतों द्वारा सद्‌गुरु बाबा जी व निरंकारी राजमाता जी का, यहाँ पहुँचने पर भावपूर्ण स्वागत किया गया। विविध पहनावों व परम्पराओं के प्रदर्शन द्वारा भक्तजनों ने 'अनेकता में एकता' का भाव प्रतिपादित किया।

इस एकदिवसीय सन्त समागम को सम्बोधित करते हुए सद्‌गुरु बाबा हरदेव सिंह जी महाराज ने कहा कि सन्तजनों ने युगों पहले से कल्याण का मार्ग बताया है। जो इस मार्ग पर चल पड़ता है, वह जीवन सुधार लेता है।

बाबा जी ने कहा कि मानव का जिस्म पा लेना मानव होने की पहचान नहीं है। मानव होने की पहचान तो मानवता के गुणों को धारण करना होता है। यह पहचान अपने कर्मों से बनानी पड़ती है। आज इन्सान द्वारा इन्सान का ही नुकसान किया जा रहा है। भेड़-बकरी का वैरी भेड़िया है। भेड़िये का वैरी शेर है। साँप का वैरी नेवला है लेकिन आदमी का वैरी आदमी ही है। यह कितनी बड़ी विडम्बना है कि मानव के आज मानव से ही खतरा है। हर किसी पर यह जिम्मेदारी है कि वह ऐसे वातावरण में सुधार लाये। **(सद्‌गुरु बाबा जी के सम्पूर्ण प्रवचन इसी पत्रिका के पृष्ठ 17 पर उपलब्ध हैं।)**

उनसे पूर्व निरंकारी राजमाता जी ने कहा कि हर प्राणी में परमात्मा का जो दीदार करते हैं वे यह महसूस करते हैं कि –

तुलसी इस संसार में सबसे मिलिए धाय।
न जाने किस वेश में नारायण मिल जायें।

जब जीवन में सद्‌गुरु से मिलाप होता है तो परमात्मा के दर्शन हो जाते हैं। सद्‌गुरु सिर्फ 'नाम' नहीं देता बल्कि राम से मिला देता है।

राम का नाम लेने वाले तो बहुत हैं। भिखारी सुबह से शाम तक राम ही का नाम लेते रहते हैं लेकिन इससे वे भक्तों की श्रेणी में नहीं आ जाते। वास्तव में उनका ध्यान इस तरफ लगा रहता है कि कौन उनके कटोरे में कितने पैसे डालता है, जब कि भक्तों का ध्यान सदा प्रभु की ही ओर होता है।

पूज्य राजमाता जी ने कहा कि माया से पदार्थ मिल सकते हैं परन्तु सच्चा सुख तो सद्‌गुरु की शरण में आने से ही मिलता है। उन्होंने कहा–

सुख किते न मिलदा जी, सुख सत्गुरु दी शरणी।

सन्त समागम में सर्वश्री संदीप खिंडा जी (गुड़गाँव), रशीदा बेगम (अमेरिका), डॉ. प्रवीणाचार्य (सरकाघाट), तेज सिंह (कुल्लू), विवेक 'रफीक' (दिल्ली), दुनीचन्द (चम्बा), गोबिन्द सिंह (महासचिव–स.नि.मं.), वी.डी. नागपाल (सदस्य प्रभारी–भवन निर्माण

विभाग–सनिमं) गीतकार जगत जी व कमल जी तथा श्रीमती राजवन्त कौर (शिमला), सहित अनेकों विचारकों, कवियों व गीतकारों ने अपनी उपस्थिति दर्ज करायी।

शेष राज्यस्तरीय सन्त समागमों की भाँति यह सन्त समागम भी भविष्य में दो दिवसीय हुआ करेगा, ऐसी सुखद सम्भावनाओं के स्पष्ट संकेत सद्गुरु बाबा जी ने दिये हैं।

समागम स्थल पर पत्रिका, प्रकाशन आदि के स्टॉल तो लगाये गये ही थे, लंगर आदि सुविधाओं की भी भरपूर व्यवस्था थी।

झलकियाँ

✸ हिमाचल प्रदेश का एक दिवसीय प्रान्तीय सन्त समागम सुजानपुरा टिहरा (जिला हमीरपुर) के विशाल कमेटी मैदान में ऐतिहासिक–अपार जनसमूह की उपस्थिति में हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। चारों तरफ हरी–भरी पहाड़ियों और कल–कल नाद करती नदियों के बीच सन्त समागम में रंग–बिरंगी पोशाकों में उपस्थित भक्तजनों के चेहरों पर अपार हर्ष देखते ही बनता था

✸ समागम मैदान तक चारों ओर से पहुँचती घुमावदार सड़कें के दोनों ओर स्थानाभाव के कारण भक्तों ने अपनी कारें, बसें व अन्य वाहन पार्क किये हुए थे। इसके अलावा समागम मैदान में बनाई गई पार्किंग भी अप्रत्याशित रूप से जैसे वाहनों से पटी पड़ी थी।

✸ प्रातःकाल निकली शोभायात्रा में सद्गुरु बाबा जी एवं निरंकारी राजमाता जी के पावन दर्शनों के लिए जैसे सारा शहर ही उमड़ पड़ा। हिमाचली, पंजाबी, हिन्दी व अन्य पहाड़ी भाषाओं में सुमधुर स्वरों में भक्तजन गीतों द्वारा गुरुदेव का स्वागत कर के अभिभूत हुए जा रहे थे। शोभा यात्रा में पहाड़ों की लोकसंस्कृति के मनोरम दर्शन कर के हर कोई आह्लादित हो रहा था।

✸ सन्त समागम परिसर में विशाल पंडाल की व्यवस्था की गई थी फिर भी हजारों की संख्या में भक्तजन ठाहर घास पर बैठकर सन्तजनों व सद्गुरु बाबा जी के वचनामृत का पान कर रहे थे।

✸ समागम परिसर उस समय तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा जब गुरुदेव हरदेव जी ने हिमाचल सन्त समागम को भविष्य में दो दिवसीय तथा कम अन्तराल पर आयोजित करने का ऐलान अपने श्रीमुख से किया।

✸ सन्त–समागम में हिमाचल के अलावा जम्मू–कश्मीर, उत्तराखण्ड, उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा तथा दिल्ली से भी बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने पहुँच कर इसे विशाल रूप प्रदान कर दिया।

✸ सन्त समागम की व्यवस्थाएं उत्तम एवं प्रभावशाली थी जिसमें प्रबन्धकों, साध संगत तथा सेवादल का सराहनीय योगदान रहा। स्थानीय प्रशासन का भी पूर्ण योगदान प्राप्त हुआ।

आवश्यक सूचना

सन्त निरंकारी सत्संग भवन, हैदराबाद की पुरानी इमारत ध्वस्त करके नयी इमारत बनायी जा रही है। यह इमारत पूर्ण होने में लगभग तीन वर्ष का समय लगेगा अतः विभिन्न शाखाओं के प्रमुख/मुखी महात्माओं के चरणों में प्रार्थना है कि वे किसी भी महापुरुष को 'इस अवधि में' उक्त सत्संग भवन में ठहरने हेतु पत्र न दें क्यों कि नयी इमारत तैयार होने तक, स्थानीय प्रबन्धक, जगह नहीं दे पाएंगे। – **प्रमुख**

सन्त निरंकारी मंडल
हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश)

आत्ममंथन का सही हल

1. ब	5. अ	9. स	13. ब
2. अ	6. ब	10. ब	14. द
3. ब	7. ब	11. अ	15. द
4. अ	8. अ	12. स	

श्रद्धांजलि

उन्होंने भक्ति भरा जीवन जीकर लोक सुखी परलोक सुहेला किया – निरंकारी बाबा जी

दिल्ली, 12 जून। पूज्य माता सविन्दर जी को जन्म देने वाली माता श्रीमती अमृत कौर जी (धर्मपत्नी – श्री मनमोहन आनन्द जी) आज यमुना नगर (हरियाणा) में, ब्रह्मलीन हो गयीं। वे काफी समय से अस्वस्थ चल रही थीं।

माता अमृत कौर जी की सन्त निरंकारी मिशन में उल्लेखनीय सेवाएं रही हैं। ऑल इंडिया वर्किंग कमेटी के गठन के समय से ही वे इसकी सदस्य रही हैं।

15 जून को दिलली के बुराड़ी रोड पर ग्राउण्ड नं. 8 में आयोजित श्रद्धांजलि समारोह को सम्बोधित करते हुए सद्गुरु बाबा हरदेव सिंह जी ने कहा कि असहज परिस्थितियों में भी सहजता को अपनाये रखना बहुत धैर्य और सहनशीलता का परिचायक होता है। ऐसा सहज जीवन जीने वाले बहुत कम होते हैं। वे वास्तव में महान होते हैं। माता अमृत जी की जुबान पर हर वक्त शुकराने का ही भाव रहता था। 'बहुत कृपा है, बहुत रहमत है', यही कहती थीं। जब भी बात करते – **Thank you** अवश्य कहतीं।

सद्गुरु बाबा जी ने कहा कि जहाँ उन्होंने आध्यात्मिक पहलू को परिपक्व रखा वहीं सामाजिक तौर पर भी सार्थक योगदान दिया। समाज सेवा के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय पहल की और हर अवसर पर बढ़–चढ़ कर भाग लिया। आज बच्चों में भी वही संस्कार देखने को मिलते हैं।

सद्गुरु बाबा जी ने उनके धैर्य, दृढ़ निश्चय, गुरमत भावना तथा अदम्य उत्साह की भूरि–भूरि प्रशंसा की।

श्रद्धांजलि समारोह में माता अमृत जी के परिजनों तथा उनके चिकित्सक डॉ. रूपिन्दर सिंह जी ने भी अपने भाव व्यक्त किए।

वे बालपन से ही सत्य के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देती रहीं –निरंकारी बाबा जी

दिल्ली, 14 जून। परममतामयी निरंकारी राजमाता कुलवन्त कौर जी की बड़ी बहन, माता मानकौर जी (धर्म पत्नी –महात्मा हरबंस सिंह जी) आज दोपहर सन्त निरंकारी कालोनी में ब्रह्मलीन हो गयीं।

17 जून को मैदान नं. 8 में आयोजित उनके श्रद्धांजलि समारोह को सम्बोधित करते हुए सद्गुरु बाबा हरदेव सिंह जी ने कहा कि उन्होंने बहुत श्रद्धा व भक्ति भाव से जीवन जिया। उन्होंने सादगी व विश्वास से, गोलेपन की अवस्था में रहकर, गुरसिखी के रास्ते पर चलकर जीवन व्यतीत किया।

बाबा जी ने उनकी माता सोमा जी, पिता मन्ना सिंह जी, बाबा बूटा सिंह जी, बाबा अवतार सिंह जी व बाबा गुरबचन सिंह जी के मार्गदर्शन में उन्हें मिले भक्ति संस्कारों की सहज प्रशंसा की।

माता मान कौर जी में कविता लिखने का बड़ा गुण था। इस सम्बन्ध में निरंकारी राजमाता जी ने कहा कि वे कहती थीं कि शेर अपना शिकार खुद करता है तो हम भी क्यों न अपनी भक्ति भावनाओं को खुद ही कविताओं–गीतों में ढालें। बाकी भक्तों की भावनाएं उनकी अपनी हैं, हमारे जीवन में सुधार हमारी अपनी भक्ति से आयेगा।

पूज्य राजमाता जी ने बचपन की अनेकों स्मृतियाँ ताजा की तथा परिवार के लिए आशीर्वादों की याचना की।

इस अवसर पर उनके गीतों–कविताओं के गायन से भी उन्हें भावपूर्वक स्मरण किया गया। अनेकों वक्ताओं–गीतकारों आदि ने उनके सादगी भरे परिपक्व जीवन को स्मरण किया।

पाठक मंच

सन्त निरंकारी का अप्रैल अंक समय पर प्राप्त हो गया था। पत्रिका मिशन का आइना है। सद्गुरु का संदेश, काव्य प्रवाह, जानकारियाँ एवं विभिन्न महापुरुषों के आलेखों से सुसज्जित यह वह गुलदस्ता है, जो अपनी महक से पूरे जगत को महका रहा है।

सम्पादक मंडल का अथक प्रयास इसकी सुन्दरता में चार-चाँद लगाता है। आवरण मनमोहक एवं रूह तक को सद्गुरु की रहमतों से सराबोर करने वाला होता है

❐ **डॉ. प्रद्युम्न भल्ला** (कैथल, हरियाणा)

सन्त निरंकारी पत्रिका जीवन में पारस पत्थर के समान है, जो हमारे मस्तिष्क के अन्दर सभी लोहे रूपी विचारों को सोने में परिवर्तित कर देती है।

❐ **रितेश कुमार चौधरी** (सासाराम, बिहार)

मई 2008 अंक में मुखपृष्ठ पर बाबा जी की मनमोहक तस्वीर बेहद प्यारी लगी। तस्वीर और नीचे लिखे शब्दों (पहले स्वीकार, फिर प्यार) का सामंजस्य हृदय को छू गया।

सूचना-समाचार पढ़ने के बाद सभी तस्वीरों का सहयोग कुछ यूँ प्रतीत हुआ जैसे जहाँ के समागमों में दास नहीं पहुँच सका, वहाँ भी अपनी उपस्थिति दर्ज हो चुकी है।

सम्पादकीय 'व्यक्ति और सिद्धान्त', 'मेरे मार्गदर्शक- भगत जी (शारदा भाटिया) तथा 'पहले स्वीकार, फिर प्यार' (एच.एस.'उपासक') में प्रथम और तीसरा पाठ हमें 'व्यक्ति और सिद्धान्त' के अन्तराल एवं सामंजस्य का बोध कराता है।

आज हजारों पाठकों में से दास अपने सम्पादक जी को वैसे ही समझता है जैसे बहन शारदा भाटिया जी के जीवन में भक्त शिरोमणि भगत कोदूमल जी थे। उनके जीवन में भगत जी ने प्रत्यक्ष रूप से मार्गदर्शक भूमिका निभाई जब कि सम्पादक जी तो दूर रहकर भी अपने लेख से मुझे ही क्या हजारों पाठकों को सजा रहे हैं। ऐसे लेखों की आवश्यकता आज जन-जन के लिए है। 'सत्य एक-कहे अनेक' ने भी प्रभावित किया।

सद्गुरु बाबा जी के चरणों में प्रार्थना है कि वे समस्त प्रकाशन विभाग, पत्रिका विभाग, सम्पादक मंडल व अन्य सेवारत कलाविदों को ऐसा आशीर्वाद दें कि वे सब अपने-अपने क्षेत्रों में ऊँचाई हासिल करें।

❐ **तारकेश्वर भारती** (छपरा, बिहार)

जून की पत्रिका जैसी समय पर मिलने के कारण अपार खुशी हुई। और यह खुशी तब दोगुनी हो गई जब यह पढ़ा कि सन्त निरंकारी पत्रिका के सभी सम्पादकों ने एक जगह एकत्र होकर इसमें और सुधार का संकल्प लिया है।

'पाठ्यक्रम से बाहर' (सुरेन्द्र कथूरिया), 'आध्यात्मिक जागृति का परिणाम' (अनु) आदि लेखों ने बहुत सुन्दर ढंग से समझाने का प्रयास किया है। सम्पादक जी की लेखनी की जितनी तारीफ की जाए कम है।

इस पत्रिका के बारे में जितना भी लिखा जाए, जितनी भी तारीफ की जाए कम लगती है। यह पत्रिका बहुत ज्ञानवर्धक है और सद्गुरु के प्रति हमारे विश्वास को और मजबूत करने में इस पत्रिका का महत्वपूर्ण योगदान है।

❐ **सौ. रिमा किशोर जेस्वानी** (डिंगनघाट, महा.)

दासी पिछले एक वर्ष से पत्रिका पढ़ती आ रही है। पढ़कर हृदय को सुकून व शान्ति मिलती है। घर बैठे ही 'जीने का ढंग' सीखने को मिल रहा है। इसके अलावा मई 2008 की पत्रिका में सम्पादकीय 'व्यक्ति और सिद्धान्त' बहुत ही सराहनीय है।

दातार आपको निरन्तर सेवा करने की शक्ति प्रदान करे, यही कामना है।

❐ **निर्मल** (सुडाना, सहारनपुर, उ.प्र.)

मार्च माह में प्रकाशित सम्पादकीय 'अवसर का लाभ उठाएं' से सद्गुरु के प्रति आस्था दृढ़ करने की प्रेरणा मिलती है। यह आत्ममंथन की ओर प्रेरित करता है।

विभिन्न कवियों की कविताएं भी विशालता की ओर अग्रसर कर रही थीं। सद्गुरु बाबा जी कृपा करें कि ऐसे विवेक व विश्वास भरे वचन लिखने की शक्ति सन्त निरंकारी परिवार को मिलती रहे।

❐ **नेत्र सिंह रावत** (पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखंड)

नाभा के नवनिर्मित सन्त निरंकारी सत्संग भवन का उद्घाटन करते हुए सद्गुरु बाबा जी, प्रबन्धक महात्माओं के साथ ।

गौचर में, अपनी भक्ति भावना का प्रवाह करती हुई स्थानीय बहनें

चम्बा (उत्तराखण्ड) में आयोजित सन्त समागम में उमड़ा विराट जनसमूह

Registered with the Registrar of Newspaper
For India Under RNI Number 723/57

Delhi Postal Regd. No. DL(N)01/0135/06-08
Licence Number U(DN) 25/2006-2008
Licenced to Post Without Pre Payment

हिमाचल प्रदेश के प्रान्तीय समागम (सुजानपुर टिहरा) में शोभायमान सद्गुरु बाबा जी व निरंकारी राजमाता जी

हिमाचल समागम में आयोजित शोभा यात्रा का नयनाभिराम दृश्य

जखोली में आयोजित सन्त समागम में आशीर्वाद दे रहे भक्तवत्सल गुरुदेव

Posted at IMBC/1
Prescribed Dates 27th & 28th
Dates of Publication : 20th & 21st
Advance Month